संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
१ अक्टूबर २०१०
वर्ष : २० अंक : ४
(निरंतर अंक : २१४)

दीपावली पर्व :
५ नवम्बर

परम पूज्य
संत श्री आसारामजी बापू

भूख-प्यास प्राणों को लगती है, सुख-दुःख मन को होते हैं, राग-द्वेष मति में होते हैं। आप उनको देखनेवाले हो... अपने साक्षीस्वभाव में सजग हो जाओ। उस आत्मदेव में अपनी परम दिवाली मनाओ। फिर तो आपकी सदा दिवाली... जिस पर आपकी मीठी नजर पड़ेगी उसकी भी दिवाली।

३० सितम्बर... रामजन्मभूमि फैसले के कारण देशभर में लगी १४४ धारा...
पर धन्य है सत्संगप्रेमी शासन की संतप्रेम की धारा...
जिसके फूट निकलते ही सर्जित हुआ कर्नाटक, गोवा में महाकुंभ नजारा !
बेलगाम (कर्नाटक)
पोंडा (गोवा)
बागलकोट (कर्नाटक)
नववर्ष की सुंदर सौगात
साधुदर्शनमात्रेण तीर्थकोटिफलं लभेत् ।
पूज्य बापूजी के सत्प्रेरणा व शांतिप्रदायक एवं
चित्ताकर्षक श्रीचित्रों तथा अनमोल आशीर्वचनों से
सुसज्जित वर्ष 2011 के वॉल कैलेंडर, पॉकेट
कैलेंडर, टेबल कैलेंडर और डायरी उपलब्ध हैं ।
250 या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर
आप अपनी फर्म, दुकान आदि का नाम-पता
छपवा सकते हैं । आपके ऑर्डर शीघ्र आमंत्रित हैं ।
सभी संत श्री आसारामजी आश्रम, श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध ।
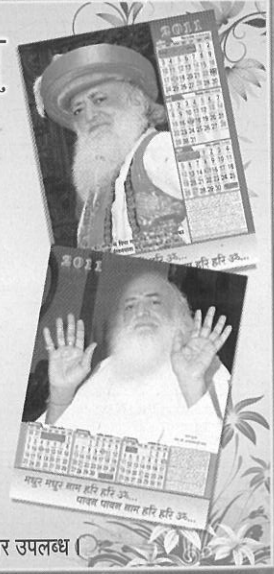
ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलगू, कन्नड, अंग्रेजी व सिंधी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २० अंक : ४
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २१४)
१ अक्टूबर २०१० मूल्य : रु. ६-००
आश्विन-कार्तिक वि.सं. २०६७

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात).
मुद्रण स्थल : विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रिज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद- ३८०००९ (गुजरात).
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. २२५/-
(४) आजीवन : रु. ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में
(सभी भाषाएँ)

(१) वार्षिक : रु. ३००/-
(२) द्विवार्षिक : रु. ६००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. १५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ 20
(२) द्विवार्षिक : US $ 40
(३) पंचवार्षिक : US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US $ 20	US $ 40	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात).
फोन नं. : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

इस अंक में...

विभिन्न टी.वी. चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS	care WORLD	दिशा	JUS one (अमेरिका)
रोज सुबह ५-३० व ७-३० बजे तथा रात्रि १०-०० बजे	रोज सुबह ७-०० बजे	रोज सुबह ८-१० बजे	सोम से शुक्र शाम ७ बजे, शनि-रवि शाम ७-३० बजे

❋ A2Z चैनल रिलायंस के 'बिग टीवी' पर भी उपलब्ध है। चैनल नं. 425
❋ care WORLD चैनल 'डिश टीवी' पर उपलब्ध है। चैनल नं. 770
❋ दिशा चैनल 'डिश टीवी' पर उपलब्ध है। चैनल नं. 757
❋ JUS one चैनल 'डिश टीवी' (अमेरिका) पर उपलब्ध है। चैनल नं. 581

क्यों देर करते हो ?

(पूज्य बापूजी की अमृतवाणी)

हमारे देव केवल एक मंदिर में नहीं रह सकते, हालाँकि वे केवल एक मंदिर में ही थे ऐसी बात नहीं थी। हमारी बुद्धि छोटी थी तो हमने उनको मंदिर में मान रखा था। अब तो वे अनंत ब्रह्माण्डों में हैं, ऐसी हमारी मति हो रही है। हमारे देव अभी बड़े नहीं हुए, वे तो बड़े थे परंतु अब हमको उनकी कृपा से देखने की दृष्टि बढ़िया मिली है।

अगर तुम अपने देव को सर्वत्र नहीं देख सकते हो तो कम-से-कम एक ऐसे पुरुष में उनको देखो, जिनको तुम निर्दोष प्यार कर सकते हो। एक ऐसे चित्त में उनको देखो जिससे तुम्हारी दृष्टि को ठंडक मिलती हो। फिर धीरे-धीरे दूसरे व्यक्ति में भी उन्हीं अपने देव को देखो, फिर तीसरे-चौथे में देखो। ऐसा करते-करते बुद्धि को विशाल करो तो तुम्हारी मर्जी और उन्हीं देव के प्यारों को मिल के, उनके वचनों को पाकर एकदम दृष्टि को खोल दो तो तुम्हारी मर्जी ! पर आना तो यहीं पड़ेगा, अखंड अनुभव में... वहीं विश्रांति है और वही अपने जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।

तुम अपना लक्ष्य उन्नत बना दो तो फिर हजार-हजार गलतियाँ हो जायें, डरो नहीं। फिर से कोशिश करो, एक बार फिर से कदम रखो। जिसका लक्ष्य पवित्र नहीं, उन्नत नहीं, सर्वव्यापक सर्वेश्वर के साक्षात्कार का नहीं है, वह लक्ष्यहीन आदमी हजारों गलतियाँ करेगा और लक्ष्यवाला आदमी पचासों गलतियाँ कर लेगा किंतु पचासों गलतियाँ करता है तब भी लक्ष्य जिसका उन्नत है, वह जीत जाता है। जिसका लक्ष्य उन्नत नहीं है वह सैकड़ों गलतियों में रुकेगा नहीं, हजारों में नहीं रुकेगा, लाखों में नहीं रुकेगा, करोड़ों गलतियाँ करोड़ों जन्मों तक करता ही रहेगा क्योंकि उसके जीवन में सर्वेश्वर, सर्व में व्यापक एक परमात्मा है - ऐसा लक्ष्य नहीं है; उसके जीवन में मोक्ष का लक्ष्य नहीं है, उसके जीवन में सुख-दुःख से पार होने का लक्ष्य नहीं है। वह सदा सुखी-दुःखी होता रहेगा और जो सुखी-दुःखी होता है वह गलतियाँ करता ही है। इसीलिए हजारों-हजारों जन्म बीत गये, हजारों-हजारों युग बीत गये, काम पूरा नहीं हुआ क्योंकि लक्ष्य नहीं बना। इसलिए हे मेरे प्यारे साधक ! तू अपने जीवन का लक्ष्य बना ले। सर्वत्र सर्वेश्वर को देख, आपसहित परमेश्वर को देख।

सो प्रभ दूर नहीं, प्रभ तू है।
घर ही महि अंमृतु भरपूरु है,
मनमुखा सादु न पाइआ। (सादु = स्वाद)
जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।
मैं भोरी डूबन डरी, रही किनारे बैठ ॥

खोज अपने-आपमें - जो विचार उठता है वह कहाँ से उठा ? जो इच्छाएँ और चिंताएँ उठती हैं, कहाँ से उठीं, क्यों उठीं ? खोज ! खोज !! और तू पहुँच जायेगा अपने परम लक्ष्य में। फिसल जाय तो डर मत, फिर से चल। रुक जाय कहीं, कोई थाम ले तुझे तो सदा के लिए चिपक मत, फिर चल। चल, चल और चल... अवश्य पहुँचेगा। और चलना पैरों से नहीं है, केवल विचारों और अपने सत्कृत्यों से चलना है। चलना क्या है ? तन और मन की भागदौड़ मिटाकर अपने अचल

आत्मा में विश्रांति पाना ही सचमुच में चलना है। सर्वेश्वर कहीं दूर नहीं है कि चलो, यात्रा करो और चलते-चलते पहुँचो। क्या कलकत्ते (कोलकाता) में बैठा है, दिल्ली या वैकुंठ में बैठा है ? जिस सत्ता से तुम चल रहे हो न, वह सत्ता भी उसीकी है और जहाँ से उसको खोजने की शुरुआत करते हो, वहीं वह बैठा है। फिर भी खोजो। उसीके भाव से खोजते-खोजते घूमघाम के वहीं विश्रांति मिलेगी जहाँ से खोजना शुरू हुआ है, किंतु बिना खोजे विश्रांति नहीं मिलती। बिना खोजे अगर बैठ गये तो आलस्य, प्रमाद और मौत मिलती है। खोजते-खोजते आप नाक की सिधाई में सीधे चलते जाओ, चलते-चलते पूरी पृथ्वी की यात्रा करके वहीं पहुँचोगे जहाँ से चले थे।

ॐ... ॐ... ॐ... ॐ... मधुर-मधुर आनंद-ही-आनंद ! शांति-ही-शांति ! तू-ही-तू, तू-ही-तू अथवा तो मैं-ही-मैं ! वह गैर, वह गैर... नहीं, सब तू-ही-तू अथवा सबमें मैं-ही-मैं। तुम अनंत से जुड़े हो। वास्तव में तुम अनंत हो। अनंत श्वासराशि से तुम्हारा श्वास जुड़ा है। अनंत आकाश से तुम्हारा हृदयाकाश और शरीर का आकाश जुड़ा है। तुम्हारा शरीर अनंत जलराशि से जुड़ा है, अनंत तेजराशि से जुड़ा है, अनंत पृथ्वीतत्त्व से जुड़ा है। ये पंचभूत भी अनंत महाभूतों से जुड़े हैं। इन पंचभूतों को चलानेवाला तुम्हारा चिदाकाश तो अपने ब्रह्मानंदस्वरूप से, तुम्हारा आत्मा तो अपने परमात्मा से सदैव जुड़ा है। जुड़ा है, यह कहना भी छोटी बात है। हकीकत में तुम्हारा आत्मा ही परमात्मा है। जैसे तरंग पानीस्वरूप है, घटाकाश महाकाशस्वरूप है, ऐसे ही जीव ब्रह्मस्वरूप है; खामखाह परेशान हो रहा है।

तुम अपने परमेश्वर-स्वभाव का सुमिरन करो और जग जाओ... युद्ध के मैदान में श्रीकृष्ण के प्रसाद से अर्जुन ने सुमिरन कर लिया और अर्जुन कहता है : **नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा...** तो यहाँ साबरमती के तट पर तुम भी सुन लो, **नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा...** कर लो। क्यों कंजूसी करते हो ! क्यों देर करना ! यह तो जेटयुग है मेरे लाला ! मेरी लालियाँ ! ॐ... ॐ... ॐ... ॐ... ❐

व्रत, पर्व और त्यौहार

१८ अक्टूबर : पापांकुशा एकादशी

२२ अक्टूबर : शरद पूर्णिमा

२६ अक्टूबर : करवा चौथ

२ नवम्बर : रमा एकादशी, ब्रह्मलीन मातुश्री माँ महँगीबा महानिर्वाण-दिवस

३ नवम्बर : धनतेरस, धन्वंतरि जयंती

४ नवम्बर : काली चौदस (नरक चतुर्दशी)

५ नवम्बर : दीपावली, महालक्ष्मी-पूजन

६ नवम्बर : गोवर्धन पूजा, अन्नकूट

७ नवम्बर : बलि प्रतिपदा, भाईदूज

९ नवम्बर : अंगारक (मंगलवारी) चतुर्थी

१० नवम्बर : लाभ पंचमी

१५ नवम्बर : पूज्यपाद भगवत्पाद स्वामी श्री श्री लीलाशाहजी महाराज महानिर्वाण-तिथि

वर्ष के साढ़े तीन मुहूर्तों में से डेढ़ मुहूर्त

विजयादशमी (१७ अक्टूबर) को पूरे दिन और कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (७ नवम्बर) को आधे दिन तक स्वयंसिद्ध मुहूर्त है (अर्थात् इन दिनों में कोई भी शुभ कर्म करने के लिए पंचांग-शुद्धि या शुभ मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं रहती)। ये सर्वकार्य सिद्ध करनेवाले हैं।

(बालबोधज्योतिषसारसमुच्चय : ८.७९,८०)

स्टिंग के नाम पर आस्था से खिलवाड़

– कल्कि पीठाधीश्वर श्री प्रमोद कृष्णम् महाराज, अध्यक्ष, अखिल भारतीय संत समिति

१० व ११ सितम्बर को 'आज तक' चैनल पर दिखाये गये तथाकथित स्टिंग ऑपरेशन की वास्तविकता उजागर करते हुए 'ए टू जेड' चैनल पर दिये इंटरव्यू में श्री प्रमोद कृष्णम्‌जी महाराज ने कहा :

यह जो एक टी.वी. चैनल पर हिन्दू संतों का स्टिंग ऑपरेशन दिखाया गया, उसको देखने के बाद ऐसा लगता है कि यह तो स्टिंग नहीं है, यह क्रिएट किया (बनाया) गया है। स्टिंग तो वह होता है जिसमें कहीं गलत काम हो रहा हो और खुफिया तौर से उसे रिकॉर्ड कर लिया जाय। यह तो स्टिंग के नाम पर धोखा है। मीडिया को चाहिए कि जो घटना हो रही है उसको दिखाये लेकिन यह तो विकृत, द्वेषपूर्ण, बदइरादे से खबर बनायी जा रही है... आप ही शिकायतकर्ता हो गये, आप ही जाँच-अधिकारी हो गये, आप ही वकील हो गये, आप ही न्यायाधीश हो गये और आप ही ने सजा सुना दी !!!

पीछे जो घटनाएँ घटी हैं हिन्दुस्तान में, उनमें आरुषी मर्डर केस में हुआ यह कि उसके पिता का जैसे ही नाम आया, चैनलों ने यह दिखाना शुरू कर दिया कि देखिये एक कलियुगी पिता का कु-करतब, कलियुगी पिता ने अपनी बेटी की हत्या की ! (परंतु बाद में ऐसा सिद्ध नहीं हो पाया है, यह सभी जानते हैं।) अभी शाइनी आहूजा वाला केस देखिये। (चैनलों की वजह से) शाइनी आहूजा खलनायक, अपराधी सिद्ध हो गया किंतु उस नौकरानी ने कह दिया है कि 'मैंने किसीके कहने पर दबाव, लालच में ऐसा कहा था।' तो अगर वह निर्दोष साबित हो गया तो आज तक उसकी जो मानहानि हुई है वह क्या कोई टी.वी. चैनल वापस दे देगा ? आरुषी के माता-पिता को छोड़ो, पूरे देश में बच्चे डरने लगे थे अपने माता-पिता से। ऐसी पत्रकारिता से हमारा सामाजिक ढाँचा कमजोर हो रहा है। इसलिए मीडिया से मैं अनुरोध करना चाहूँगा कि वह अपने अधिकारों की सीमा में रहकर काम करे क्योंकि किसीको भी भारत के कानून को तोड़ने का अधिकार नहीं दिया गया है।

भारत के संतों के खिलाफ स्टिंग के नाम पर यह जो दिखाया जा रहा है, मुझे लगता है कि कहीं-न-कहीं इसके पीछे बहुत बड़ी साजिश है। 'अखिल भारतीय संत समिति' का अध्यक्ष होने के नाते मैं इस बात को बड़े स्पष्ट तरीके से कहना चाहता हूँ कि अगर इस तरह के षड्यंत्र किसी और धर्म के धर्मगुरु के साथ हो जायें तो इस देश में आग लग जायेगी, तमाम तूफान खड़ा हो जायेगा।

हमारा धर्म बड़ा ही सहनशील है, जो हमारे संतों पर अत्याचार-दुष्प्रचार होता है तो भी हम सहन कर लेते हैं। आखिर में सोचो, कौन है इसके पीछे ? हिन्दू संतों के ही खिलाफ स्टिंग के नाम पर साजिश क्यों हो रही है ? इस पर भी सोचो। जब तक एक पक्ष देखा है, दूसरा पक्ष देखा ही नहीं तो आपको किसने अधिकार दिया कि किसीको मुजरिम ठहरा दें ? किसीको हत्यारा कहते हैं, किसीको दोषी, किसीको ढोंगी, किसीको पाखंडी, किसीको दुराचारी कहते हैं तो मैं तो नहीं समझता कि यह उचित है। जहाँ तक आसारामजी बापू का सवाल है, सुधांशु महाराज का सवाल है और जिन लोगों के खिलाफ स्टिंग देखने को मिला है, उसमें कहीं भी ऐसा नहीं लग रहा है। मान लीजिये, किसी आश्रम, मंदिर, मसजिद या गुरुद्वारे में कोई व्यक्ति जाता है और कहता है कि मैं पीड़ित हूँ, मुझे शरण दे दो (हमारी रिश्तेदार मानसिक रूप से पीड़ित है। अपने नाम की हवाई जहाज की टिकट खरीदने में भी डरती है, उस पर झूठा केस दायर किया गया है। पुलिस उसके पीछे पड़ी है, ऐसा उसे भास हो रहा है। उसकी जान बचाइये बाबा !) तो कौन ऐसा धर्म है जिसका धर्मगुरु उसकी पीड़ा को दूर करने के लिए उसे शरण नहीं देगा ? यह तो स्वाभाविक है। अब यह अलग

बात है कि आपने सरल स्वभाव संतों को ठगना शुरू कर दिया है कि आप एक नाटक करके एक व्यक्ति भेजते हैं, कभी उनको पैसे का लोभ देने का प्रयास करते हैं, कभी वैदिक विश्वविद्यालय खोलने की बात करते हैं तो गलत काम संत-महात्मा नहीं कर रहे हैं, गलत काम आप कर रहे हैं क्योंकि आप गलत काम करने के लिए उनको प्रेरित कर रहे हैं। मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूँ कि आप संतों को धोखा दे के उनको ठग रहे हैं तो ठगी, छल-फरेब का मुकदमा आप पर लागू होना चाहिए।

जिनके हजारों अनुयायी हैं, लाखों अनुयायी हैं, जिनकी इस देश में प्रतिष्ठा है, सम्मान है उनको आप एक मिनट में बदनाम कर देते हैं कि देखिये इस संत का काला कारनामा ! लाखों लोगों की भावनाओं से आप खेल रहे हैं। धार्मिक भावनाओं और धार्मिक आस्थाओं पर कुठाराघात कर रहे हैं।

भारत का संविधान यह अधिकार देता है कि हम किसी भी धर्म को, किसी भी धर्मगुरु को मान सकते हैं; यह अपनी व्यक्तिगत आस्था है। तो जनता की आस्था से खिलवाड़ किया जा रहा है, यह कतई उचित नहीं है। इस पर रोक लगनी चाहिए व यह फैसला होना चाहिए कि आपको खबर दिखाने का अधिकार है, खबर बनाने का नहीं !

एंकर : महाराज ! यह क्यों किया जा रहा है ?

महाराज : इसमें छुपाने की बात ही नहीं है। मुझे साफ लग रहा है यह सब पैसे का, टी.आर.पी. का खेल है। हजारों करोड़ रुपये टी.वी. चैनलों ने इसी धंधे में लगा रखे हैं, जो कि गलत बात है। पैसा कमाने के लिए आप किसीको बदनाम करते हैं। बीस-बीस, पचास-पचास साल की जिनकी तपस्या है, उनसे आप एक गॉसिप (गप्प) कर रहे हैं, छल-फरेब कर रहे हैं। फिर आप उसे दिखायेंगे, वह भी तोड़-मरोड़ के। अगर जनवरी में आप उसको रिकॉर्ड करते हैं तो जून में दिखाते हैं। पाँच-छः महीने उसको आप एडिट करते हैं, उसमें स्क्रिप्ट कराते हैं, फेब्रिकेट करते हैं (झूठी बातें गढ़ते हैं)। यह बहुत बड़ा अपराध है, गुनाह है। ❐

ये विडियो व आवाज को काट-छाँटकर प्रसारित करते हैं

परम पूज्य सद्गुरुदेव संत श्री आसारामजी बापू के श्रीचरणों में सादर प्रणाम !

आज भारतीय मीडिया जिस दिशा में जा रहा है वह काफी दुर्भाग्यपूर्ण है। अपने ही संत-संस्कृति का मखौल उड़ाकर पूरे विश्व में भारत की छवि को बिगाड़ने का प्रयास कुछ चैनल कर रहे हैं। मैं तो खुद एक टी.वी. पत्रकार हूँ इसलिए बेहतर तरीके से जानता हूँ कि मीडिया में कुछ ऐसे तत्त्व घुस आये हैं, जिन्होंने भारतीय संत-समाज को बदनाम करने का ठेका दुराचारियों से ले लिया है।

पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति का डंका बजानेवाले और अध्यात्म-ज्ञान, आत्मज्ञान का खजाना बाँटनेवाले, स्वस्थ, सुखी, सम्मानित जीवन की राह दिखानेवाले लोकलाड़ले संत श्री आसारामजी महाराज को सनसनी खबर बनाकर बदनाम करने का सोचा-समझा षड्यंत्र है। केवल बापूजी ही नहीं, श्री श्री रविशंकरजी महाराज, कांची कामकोटि पीठ के श्रद्धेय शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी, श्री सत्य साँईं बाबा और योगगुरु स्वामी रामदेवजी को भी बदनाम करने का कुचक्र कुछ मीडिया संस्थानों ने किया है।

दिन-रात दौड़-धूप कर समाज को जागृत करने में तत्पर बापूजी के लोक-कल्याणकारी

कार्य दिखाने में इन चैनलों को शर्म आती है, परंतु अभिनेता-अभिनेत्रियों के लज्जाहीन बाइट इंटरव्यू और फुटेज दिखाने में ये गर्व महसूस करते हैं। मैं जानता हूँ कि किस तरीके से बापूजी के सत्संग के वास्तविक विडियो और आवाज को काट-छाँटकर प्रसारित किया जाता है। टी.आर.पी. (टेलीविजन रेटिंग प्वाइंट) बढ़ाने के चक्कर में इन अधर्मियों को यह भी नहीं पता कि ऐसा करके वे भारत की अस्मिता पर प्रहार कर रहे हैं। अरे ये सहनशील हिन्दू संतों के पीछे क्यों पड़े हैं ? और... कट्टरपंथी धर्मों के आचार्यों के खिलाफ एक शब्द भी छापने व दिखाने की हिम्मत इनमें क्यों नहीं है ? क्योंकि उनके बारे में कुछ दिखाया तो वे आग लगा देंगे, काटकर रख देंगे, लेकिन ये हिन्दू संत अपमान सह लेते हैं और इन अधर्मियों का फिर भी बुरा न चाहकर लोक-कल्याण में लगे हैं।

मैं तो इन चैनलों के मालिकों के साथ ही भारत सरकार से अपील करता हूँ कि वह जाँच कराये कि कहीं भारतीय संस्कृति का उपहास उड़ानेवाले इन चैनलों में आतंकवादी व आई.एस.आई. एजेंट तो नहीं घुस गये हैं, जो मीडियारूपी मजबूत हथियार का इस्तेमाल कर भारत को नष्ट-भ्रष्ट करने पर उतारू हैं। इन चैनलों के बड़े पदों पर भी संदिग्ध लोगों का आधिपत्य बढ़ता जा रहा है।

मीडिया में कुछ अच्छे लोग भी हैं जो संस्कृति के रक्षण में लगे हैं लेकिन कई बार जब रिपोर्टर खबर भेजता है तो वह या तो रोक ली जाती है या फिर ये विधर्मी चैनल उन खबरों को निगेटिव बनाकर प्रसारित करते हैं। पत्रकार न चाहकर भी कई बार अपने आलाओं के लिए नकारात्मक खबरें बनाने को बाध्य हो जाता है।

मैं मीडिया समुदाय से आग्रह करना चाहूँगा कि भारतीय संस्कृति का रक्षक बने, न कि भक्षक ! भारत के अध्यात्म-ज्ञान की आज भारत को ही नहीं पूरे विश्व को जरूरत है, इसलिए बापूजी जैसे महान संतों के वचनों को जन-जन तक पहुँचाकर अपना व विश्व का कल्याण करें।

पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में पुनः नमन।

– धर्मेन्द्र साहू

टी.वी.पत्रकार, संवाददाता,

सहारा समय न्यूज चैनल।

कबीरा निंदक ना मिलो पापी मिलो हजार।
एक निंदक के माथे पर लाख पापिन को भार॥

संतों की निंदा करके समाज की श्रद्धा तोड़नेवाले लोग कबीरजी के इस वचन से सीख लेकर सँभल जायें तो कितना अच्छा है !

जो अपराध छुड़ायें, रोग मिटायें, राष्ट्रप्रेम में दृढ़ बनायें, सबमें समता-सद्भाव बढ़ायें, ऐसे संत पर से श्रद्धा तोड़ना, इसे राष्ट्रद्रोह कहें कि विश्वमानव-द्रोह कहें ? धिक्कार है ऐसे द्वेषपूर्ण रवैयेवालों को ! **– आर.सी. मिश्र** □

जीवन-संजीवनी

– श्री परमहंस अवतारजी महाराज

✻ चाहे जितना मूल्य दो, जीवन का एक श्वास भी नहीं बढ़ सकता। ऐसे अमूल्य श्वास की कद्र करो और इन्हें गुरुशब्द में लगाकर सफल करो।

✻ यदि तुममें यह इच्छा है कि सांसारिक रूप-रंग मुझे आकृष्ट न करें तो सद्गुरु के सुंदर स्वरूप से इतना प्रेम या प्रीति बढ़ाओ जितनी मछली की जल से होती है।

✻ सद्गुरु के समान परोपकारी इस संसार में कोई नहीं, क्योंकि उनके उपकार में जीव-कल्याण की भावना निहित है किंतु आम संसारी लोगों के उपकार की भावना में कोई-न-कोई स्वार्थ छिपा ही होता है। इसलिए इस प्रकार के उपकार से आत्मिक उन्नति नहीं होती।

कार्तिक मास की महिमा

(कार्तिक मास व्रत : २३ अक्टूबर से २१ नवम्बर)

सूतजी ने महर्षियों से कहा : पापनाशक कार्तिक मास का बहुत ही दिव्य प्रभाव बतलाया गया है। यह मास भगवान विष्णु को सदा ही प्रिय तथा भोग और मोक्षरूपी फल प्रदान करनेवाला है।

हरिजागरणं प्रातःस्नानं तुलसिसेवनम्।
उद्यापनं दीपदानं व्रतान्येतानि कार्तिके ॥

'रात्रि में भगवान विष्णु के समीप जागरण, प्रातःकाल स्नान करना, तुलसी की सेवा में संलग्न रहना, उद्यापन करना और दीप-दान देना - ये कार्तिक मास के पाँच नियम हैं।'

(पद्म पुराण, उ.खंड : ११७.३)

इन पाँचों नियमों का पालन करने से कार्तिक मास का व्रत करनेवाला पुरुष व्रत के पूर्ण फल का भागी होता है। वह फल भोग और मोक्ष प्रदान करनेवाला बताया गया है।

मुनिश्रेष्ठ शौनकजी ! पूर्वकाल में कार्तिकियजी के पूछने पर महादेवजी ने कार्तिक व्रत और उसके माहात्म्य का वर्णन किया था, उसे आप सुनिये।

महादेवजी ने कहा : बेटा कार्तिकिय ! कार्तिक मास में प्रातःस्नान पापनाशक है। इस मास में जो मनुष्य दूसरे के अन्न का त्याग कर देता है, वह प्रतिदिन कृच्छ्रव्रत[1] का फल प्राप्त करता है। कार्तिक में शहद का सेवन, काँसे के बर्तन में भोजन और मैथुन का विशेषरूप से परित्याग करना चाहिए।

चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहणकाल में ब्राह्मणों को पृथ्वी-दान करने से जिस फल की प्राप्ति होती है, वह फल कार्तिक में भूमि पर शयन करनेवाले पुरुष को स्वतः प्राप्त हो जाता है।

कार्तिक मास में ब्राह्मण दम्पति को भोजन कराकर उनका पूजन करें। अपनी क्षमता के अनुसार कम्बल, ओढ़ना-बिछौना एवं नाना प्रकार के रत्न व वस्त्रों का दान करें। जूते और छाते का भी दान करने का विधान है।

कार्तिक मास में जो मनुष्य प्रतिदिन पत्तल में भोजन करता है, वह १४ इन्द्रों की आयुपर्यंत कभी दुर्गति में नहीं पड़ता। उसे समस्त तीर्थों का फल प्राप्त हो जाता है तथा उसकी सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। **(पद्म पुराण, उ.खंड : अध्याय १२०)**

कार्तिक में तिल-दान, नदी-स्नान, सदा साधु पुरुषों का सेवन और पलाश-पत्र से बनी पत्तल में भोजन मोक्ष देनेवाला है। कार्तिक मास में मौनव्रत का पालन, पलाश के पत्तों में भोजन, तिलमिश्रित जल से स्नान, निरंतर क्षमा का आश्रय और पृथ्वी पर शयन - इन नियमों का पालन करनेवाला पुरुष युग-युग के संचित पापों का नाश कर डालता है।

संसार में विशेषतः कलियुग में वे ही मनुष्य धन्य हैं, जो सदा पितरों के उद्धार के लिए भगवान श्रीहरि का सेवन करते हैं। वे हरिभजन के प्रभाव से अपने पितरों का नरक से उद्धार कर देते हैं। यदि पितरों के उद्देश्य से दूध आदि के द्वारा भगवान विष्णु को स्नान कराया जाय तो पितर स्वर्ग में पहुँचकर कोटि कल्पों तक देवताओं के साथ निवास करते हैं।

जो मुख में, मस्तक पर तथा शरीर पर भगवान की प्रसादभूता तुलसी को प्रसन्नतापूर्वक धारण करता है, उसे कलियुग नहीं छूता। कार्तिक मास

---
१. इसमें पहले दिन निराहार रहकर दूसरे दिन पंचगव्य पीकर उपवास किया जाता है।

में तुलसी का पूजन महान पुण्यदायी है। प्रयाग में स्नान करने से, काशी में मृत्यु होने से और वेदों का स्वाध्याय करने से जो फल प्राप्त होता है, वह सब तुलसी के पूजन से मिल जाता है।

जो द्वादशी को तुलसीदल व कार्तिक में आँवले का पत्ता तोड़ता है, वह अत्यंत निंदित नरकों में पड़ता है। जो कार्तिक में आँवले की छाया में बैठकर भोजन करता है, उसका वर्ष भर का अन्न-संसर्गजनित दोष (जूठा या अशुद्ध भोजन करने से लगनेवाला दोष) नष्ट हो जाता है।

कार्तिक मास में दीप-दान का विशेष महत्त्व है। 'पुष्कर पुराण' में आता है :

'जो मनुष्य कार्तिक मास में संध्या के समय भगवान श्रीहरि के नाम से तिल के तेल का दीप जलाता है, वह अतुल लक्ष्मी, रूप, सौभाग्य एवं सम्पत्ति को प्राप्त करता है।'

यदि चतुर्मास के चार महीनों तक चतुर्मास के शास्त्रोचित नियमों का पालन करना सम्भव न हो तो एक कार्तिक मास में ही सब नियमों का पालन करना चाहिए। जो ब्राह्मण सम्पूर्ण कार्तिक मास में काँस, मांस, क्षौर कर्म (हजामत), शहद, दुबारा भोजन और मैथुन छोड़ देता है, वह चतुर्मास के सभी नियमों के पालन का फल पाता है।

(स्कंद पुराण, नागर खण्ड, उत्तरार्ध) ❑

रज्जब तूने गजब किया...

(बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

दादू दयालजी महाराज बड़े उच्चकोटि के संत हो गये। जयपुर के पास आमेर में उनका आश्रम था। लोग आते-जाते थे, दर्शन करते थे। एक बार रज्जब शादी करने के लिए बारात ले के जा रहा था। किसीने बताया कि यहाँ दादू दयालजी महाराज का आश्रम है। रज्जब बोले : ''अरे, शादी तो होती रहेगी। संत का द्वार आया है, संत का दर्शन करने जाऊँगा।''

दादूजी महाराज सत्संग कर रहे थे। दूल्हा रज्जब और उसके कुछ बाराती सत्संग में आकर बैठे। बारातियों ने कहा : ''चलो, शादी का समय हो रहा है।''

रज्जब बोले : ''अरे, सच्ची शादी तो आत्मा-परमात्मा की है! वह समय तो इधर मिल ही रहा है। फेरे बाद में फिर लेंगे।''

बाबाजी ने सत्संग पूरा किया। 'जरा नजदीक से दर्शन कर लें, जरा वार्तालाप हो जाय।'- ऐसा सोच के रज्जब ने बड़ी नम्रता से प्रणाम किया। उनकी नम्रता देखकर दादूजी ने एक मीठी नजर डालते हुए पूछा : ''क्या है?''

रज्जब बोले : ''बाबाजी! शादी का झमेला पालने जा रहा हूँ।''

बाबाजी ने कहा :

रज्जब तूने गजब किया, माथे बाँधा मौर।
आया था हरि भजन को, चला नरक की ठौर॥

हाड़-मांस के शरीर में प्रीति करके, सुख भोगते-भोगते कमर तोड़ के अपना मन, बुद्धि, जीवन सब खत्म करेगा? आया तो था भगवान का भजन करने को।'' दादूजी के ये दो वचन लग गये। इन वचनों ने ऐसा असर किया कि रज्जब ने अपने जीवन का रुख ही मोड़ दिया।

बोले : ''बापजी! अब मैं आज से ही भगवान का भजन करूँगा।'' रज्जब मुसलमान थे लेकिन दादूजी के बड़े अच्छे शिष्य बन गये। हरिनाम जपने और औरों को जपाने में लग गये तो लग गये और जग गये तो जग गये अपने आत्मा-परमात्मा-सद्गुरु के रास्ते। धन्य है वह घड़ी, जिस घड़ी मे रज्जब दादूजी की शरण पहुँचे और धन्य है रज्जब की विवेक-बुद्धि कि गुरु की शरण ली तो निभाया और सब कुछ पाया! ❑

लापरवाही नहीं तत्परता !

(पूज्य बापूजी की सत्संग-सुधा)

साधक के जीवन में, मनुष्यमात्र के जीवन में अपने लक्ष्य की स्मृति और तत्परता होनी ही चाहिए। संयम और तत्परता सफलता की कुंजी है, लापरवाही और संयम का अनादर विनाश का कारण है। जिस काम को करें, उसे ईश्वर का कार्य मानकर साधना का अंग बना लें। उस काम में से ही ईश्वर की मस्ती का आनंद आने लग जायेगा।

तत्परता व सजगता से काम करनेवाला व्यक्ति कभी विफल नहीं होता। आलस्य और प्रमाद मनुष्य की योग्यताओं के शत्रु हैं। लापरवाही सारी योग्यताओं को खा जाती है, इसलिए अपनी योग्यता विकसित करने के लिए भी तत्परता से कार्य करना चाहिए। जिसकी कम समय में सुंदर, सुचारु रूप से व अधिक-से-अधिक कार्य करने की कला विकसित है, वह आध्यात्मिक जगत में जाता है तो वहाँ भी सफल हो जायेगा और लौकिक जगत में भी, परंतु समय बर्बाद करनेवाला, टालमटोल करनेवाला तो व्यवहार में भी विफल रहता है और परमार्थ में तो सफल हो ही नहीं सकता।

लापरवाह, पलायनवादी लोगों को सुख-सुविधा और भजन का स्थान भी मिल जाय तो भी उनकी कार्य करने में तत्परता नहीं होती, ईश्वर में, जप में प्रीति नहीं होती। ऐसे व्यक्तियों को ब्रह्माजी भी आकर सुखी करना चाहें तो नहीं कर सकते। ऐसे व्यक्ति दुःखी ही रहेंगे। कभी-कभी देवयोग से उन्हें सुख मिलेगा तो आसक्त हो जायेंगे और दुःख मिलेगा तो बोलेंगे : 'क्या करें, जमाना ऐसा है !' ऐसा कहकर वे फरियाद ही करेंगे।

काम-क्रोध तो मनुष्य के वैरी हैं ही परंतु लापरवाही, आलस्य, प्रमाद - ये मनुष्य की योग्यताओं के वैरी हैं, इसलिए अपने कार्य में तत्पर होना चाहिए। रावण, सिकंदर, हिरण्यकशिपु, हिटलर - ये तत्पर तो थे लेकिन अहं को पोसने में, विषय-विकारों को पाने में विनाश की तरफ चले गये। आत्मा-परमात्मा को पाने का उद्देश्य बना के धर्म-मर्यादा के अनुरूप तत्परता होनी चाहिए। कई लोग तत्पर भी पाये जाते हैं पर भोग-विलास और अहं पोसने में लगते हैं तो विनाश की तरफ जाते हैं। तत्परता अविनाशी की तरफ होनी चाहिए। जो कर्मयोग में तत्पर नहीं है वह भक्तियोग और ज्ञानयोग में भी तत्पर नहीं होगा। जप करेगा तो व्यग्रचित्त होकर बंदरछाप जप करेगा, इससे उसका फल क्षीण हो जायेगा। अतः जो भी काम करो तत्परता से करो। भोजन करो तो चबा-चबाकर करो। इधर-उधर देखते-देखते, बातें करते हुए, जल्दी-जल्दी, लापरवाही से भोजन करते हैं तो भोजन पचता नहीं, आँतें खराब होती हैं, तबीयत खराब होती है। यात्रा करनी है और देर से गये, गाड़ी छूट गयी तो यह लापरवाही है। रोटी बनाते-बनाते रोटी पर काले दाग कर दिये, जला दी तो लापरवाह है, मूर्ख है। सब्जी बना रहा है तो सब्जी को छौंक लगाकर इतना सेंका कि उसके बहुत सारे विटामिन नष्ट हो गये या नमक-मिर्ची ज्यादा डाल दी अथवा तो फीकी बना दी। ऐसे लोग लापरवाह होते हैं। चावल ठीक से साफ नहीं किये, खाते समय कंकड़ आते हैं तो साफ करनेवाला लापरवाह है, मूर्ख है। चाहे कितना भी बड़ा सेठ हो, साहब हो... साहब है, वेतन लेता है इसलिए उसकी जिम्मेदारी है कि दफ्तर का काम तत्परता से करे। झाड़ू लगानेवाला है तो झाड़ू ठीक से लगाये, यह उसकी जिम्मेदारी है।

संचालक लोग लापरवाह होते हैं तो स्वामी को बहुत कष्ट सहना पड़ता है। मुनीम, मैनेजर, सहायक लापरवाह होता है तो उसके मालिक को बहुत दुःख देखना पड़ता है। लापरवाह आदमी से भगवान नाराज रहते हैं। शबरी कर्म करने में कैसी तत्पर, रैदासजी कितने तत्पर, ध्रुव और प्रह्लाद काम करने में कितने तत्पर... भगवान को प्रसन्न कर लिया, पा लिया। धिक्कार है लापरवाह लोगों को जो अपने स्वामी को दुःख देते हैं, समाज के लोगों से धोखा करते हैं ! खाना-पीना समाज का और समाज के कार्य में लापरवाही करना, ऐसे लोग कुत्ते से भी बेकार होते हैं। लापरवाह आदमी को 'कुत्ता' बोलो तो कुत्ता नाराज हो जायेगा, 'गधा' बोलो तो गधा नाराज हो जायेगा। बोलेगा : 'मैं तो रूखा-सूखा खा लेता हूँ और मालिक का काम करता हूँ, परंतु लापरवाह आदमी तो मालिक का खाता है और काम विलम्ब में डालता है, ऊपर से सफाई देता है।' पलायनवादी, लापरवाह व्यक्ति घर, दुकान, दफ्तर, आश्रम जहाँ भी जायेगा देर-सवेर असफल हो जायेगा। कर्म के पीछे भाग्य बनता है, हाथ की रेखाएँ बदल जाती हैं, प्रारब्ध बदल जाता है।

सुविधा पूरी चाहिए लेकिन जिम्मेदारी नहीं, इससे लापरवाह व्यक्ति खोखला हो जाता है। जो तत्परता से काम नहीं करता, उसे कुदरत दुबारा मनुष्य-शरीर नहीं देती। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनसे काम लिया जाता है परंतु तत्पर व्यक्ति को कहना नहीं पड़ता, वह स्वयं कार्य करता है। समझ बदलेगी तब व्यक्ति बदलेगा और व्यक्ति बदलेगा तब समाज और देश बदलेगा।

जो मनुष्य-जन्म में काम से कतराता है, वह पेड़-पौधा, पशु बन जाता है, फिर कुल्हाड़े मारकर, डंडे मारकर उससे काम लिया जाता है। सूर्य दिन-रात कार्य कर रहा है, हवाएँ दिन-रात कार्य कर रही हैं, प्रकृति दिन-रात कार्य कर रही है, परमात्मा दिन-रात चेतना दे रहा है और हम अगर कार्य से भागते फिरते हैं तो स्वयं ही अपने पैर पर कुल्हाड़ा मारते हैं।

काम की अधिकता नहीं अनियमितता आदमी को मार डालती है। विद्यार्थी है तो 'आज पढ़ने का पाठ कल पढ़ेंगे, बाद में करेंगे...' ऐसा नहीं करे। जिस समय का जो काम है वह उस समय कर ही लेना चाहिए, बाद के लिए नहीं रखना चाहिए। 'बढ़िया समय आयेगा तब कुछ करेंगे या बढ़िया समय था तब कुछ कर लेते...' नहीं, अभी जो समय है वही बढ़िया है।

जो काम, जो बात अपने बस की है उसे ईमानदारी, तत्परता और कुशलतापूर्वक करो। अपने प्रत्येक कार्य को ईश्वर की पूजा समझो। राज-व्यवस्था में भी अगर तत्परता नहीं है तो वह बिगड़ जाती है। रिश्वत मिल जाती है तो जो काम अधिकारियों से तत्परता से लेना है वह नहीं लेते और वे लापरवाह हो जाते हैं। इस देश में 'ऑपरेशन' की जरूरत है। जो कामचोर हैं, लापरवाह हैं, समाज का शोषण करते हैं, खूब रिश्वत ले के देश-विदेशों में जमा करते हैं ऐसे लोगों को तो कड़ी सजा मिलनी चाहिए, तभी देश सुधरेगा। आप लोग जहाँ भी हों, अपने जीवन को संयम और तत्परता से ऊपर उठाओ। परमात्मा हमेशा उन्नति में साथ देता है, पतन में नहीं। पतन में हमारी वासनाएँ, लापरवाही काम करती है। मुक्ति के रास्ते भगवान साथ देता है, प्रकृति साथ देती है; बंधन के लिए तो हमारी बेवकूफी, इन्द्रियों की गुलामी, लालच और हलका संग ही कारणरूप होता है। हम तो ईश्वर का संग करेंगे, संतों-शास्त्रों की शरण जायेंगे, श्रेष्ठ संग करेंगे और संयमी व तत्पर होकर अपना कार्य करेंगे - यही भाव रखना चाहिए।

लापरवाही के दुर्गुण से बचने में **'लं'** बीजमंत्र का जप सहायक है, लाभदायी है।

रोज ॐ लं लं लं लं लं........ इस प्रकार आदर से, तत्परता से कम-से-कम हजार बार जप करनेवाला लापरवाह भी सुधर जायेगा। ❑

ज्ञानसंयुक्त कर्म करें

(पूज्य बापूजी की पावन अमृतवाणी)

जीवन में ज्ञान पहले और कर्म बाद में हो। और ज्ञान भी उत्तम ज्ञान... कर्म करने का ज्ञान नहीं, कर्म के परिणाम का ज्ञान। किस कर्म से भगवत्प्रेम, भगवद्शांति, भगवन्माधुर्य, स्वतंत्रता और जीवन रसमय होगा, वह ज्ञान मिले तो आपके कर्म दिव्य कर्म होते हैं।

ज्ञान में दो धाराएँ होती हैं। सुख की प्रधानता की तरफ ज्ञान झुकता है तो जानते हुए भी हम चोरी-जारी आदि न करने का करते हैं, न खाने का खाते हैं, न बोलने का बोलते हैं। वह ज्ञान है वासना से आच्छादित ज्ञान। और जब सत्संग, ध्यान-भजन करते हैं तो परमात्म-ज्ञान से शुद्ध ज्ञान होता है। जैसे रिफाइंड तेल और ऐसा-वैसा तेल, फिल्टर प्लांट का पानी और गटर का पानी... तो फर्क है न! ऐसे ही शास्त्र के अनुसार जो करणीय है उसको करने में पूरा तन-मन, योग्यता लगा दें और जो अकरणीय है उससे बच लें। रावण कोई कम नहीं था। रावण के पास ऐहिक ज्ञान भी अद्भुत था। समुद्र को खारेपन से रहित करने की, मीठा बनाने की उसकी योजना थी। चन्द्रमा को निष्कलंक बनाना था। अग्नि को धुआँरहित बनाने की योजना थी, लकड़ी जलाओ तो धुआँ न हो। ये सारी योजनाएँ थीं किंतु सुख की प्रधानता की तरफ झुकाव हो गया तो वे योजनाएँ धरी रह गयीं। मंदोदरी पत्नी थी, और नर्तकियाँ, सुंदरियाँ थीं फिर भी रावण ने सीताजी का हरण किया। सुख की प्रधानता की तरफ झुके हुए ज्ञान ने रावण को गिरा दिया। शबरी के पास संयम की प्रधानतावाला ज्ञान था। शबरी भीलन... एक तो छोटी-सी जाति, उसमें भी शबर जाति की कुरूप, अबला, घरवालों से, कुटुम्ब से कोई रिश्ता-नाता नहीं। फिर भी मतंग ऋषि का ज्ञान उसने आत्मसात् किया तो उसे अंतर्यामी परमात्म-राम का भी साक्षात्कार हुआ और दशरथनंदन भी उसके जूठे बेर खाते हैं।

तो ज्ञान होता है दो प्रकार का। एक सुख की तरफ ले जाता है और दूसरा सही समझ देता है। जब सही समझ का महत्त्व रखोगे तो सुख में फिसलोगे नहीं। पति-पत्नी हैं, संसार में बच्चे को जन्म देना है, ठीक है परंतु सुखबुद्धि से पति-पत्नी मिलेंगे तो अकारण ऊर्जा का नाश होगा, शरीर कमजोर होंगे। जब सुख के पक्ष में आपकी इन्द्रियाँ जाती हैं, मन जाता है, बुद्धि जाती है तो **बुद्धिनाशात् प्रणश्यति**। रावण कोई कम नहीं था पर देखने-सुनने की इन्द्रियों के विषयों में महत्त्वबुद्धि की तो वह नीचे आ गया। शबरी कोई बड़ी महान नहीं थी किंतु गुरु का सान्निध्य था, आवश्यकता पूरी की और बाकी का संयम किया तो रावण को हजार वर्ष की तपस्या से जो नहीं मिला, वह शबरी को हँसते-खेलते मिला। अंतरात्मा-राम का साक्षात्कार और बाहर से दशरथनंदन का साक्षात्कार दोनों हुए।

तो शास्त्रसम्मत जो शुद्ध ज्ञान है, उसका आदर करेंगे तो आपके जीवन में प्रेममय परमात्मा

का सामर्थ्य, आनंद प्रकट होगा। जिसके जीवन में परमात्म-प्रेम, परमात्म-आनंद नहीं है, उसको शारीरिक तनाव सुरा-सुंदरी अथवा पान-मसाले की तरफ फिसलायेगा और मानसिक तनाव, भावनात्मक तनाव न जाने कितने-कितने विकारों और व्यसनों में उसको नोचता रहेगा।

जो शुद्ध ज्ञान के अनुसार कर्म करता है, उसमें भगवद्रस की उत्पत्ति होती है, कर्म करने के रस की भी उत्पत्ति होती है और वह उसी रस से तृप्त रहता है। जो ज्ञान दूसरे को दुःख देकर सुख लेने की तरफ ले जाता है, समझ लेना वह वासनासंयुक्त ज्ञान है और जो ज्ञान कठिनाई सहकर भी अपना और दूसरों का मंगल करने की तरफ आपको कटिबद्ध करता है, वह शुद्ध ज्ञान है। तो ज्ञान पहले और कर्म बाद में।

कर्म हो तो निष्ठाजन्य हो। जड़ता, तमोगुण न हो अथवा आधे में कर्म न छोड़ दें। ज्ञानस्वरूप के प्रकाश में कर्म हों। जैसे शिवाजी महाराज के कर्म को समर्थ रामदासजी की **'राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्।'** ऐसी आत्मविद्या का सम्पुट मिल गया तो शिवाजी का राजकर्म, राजधर्म भी आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार करानेवाला हो गया और हिटलर, सिकंदर के पास युद्ध का ज्ञान तो बहुत था परंतु स्वार्थ की प्रधानता थी तो उनको ले डूबा।

तो वासना का महत्त्व समझ के कर्म करते हैं तो वे कर्म हमको ईश्वर से दूर ले जाते हैं परंतु ज्ञान-विवेक की प्रधानता से, शास्त्र-प्रधानता से ज्ञान का आदर करके कर्म करते हैं तो वे कर्म हमें सच्चिदानंद से मिलानेवाले होते हैं। आपका सत्स्वभाव, चेतनस्वभाव, आनंदस्वभाव प्रकट होने लगता है। जीवन्मुक्त अवस्था में आपकी स्थिति होने लगती है। मरने के बाद मुक्ति नहीं जीते ही परम मुक्ति का अनुभव! ❑

जीवन सौरभ
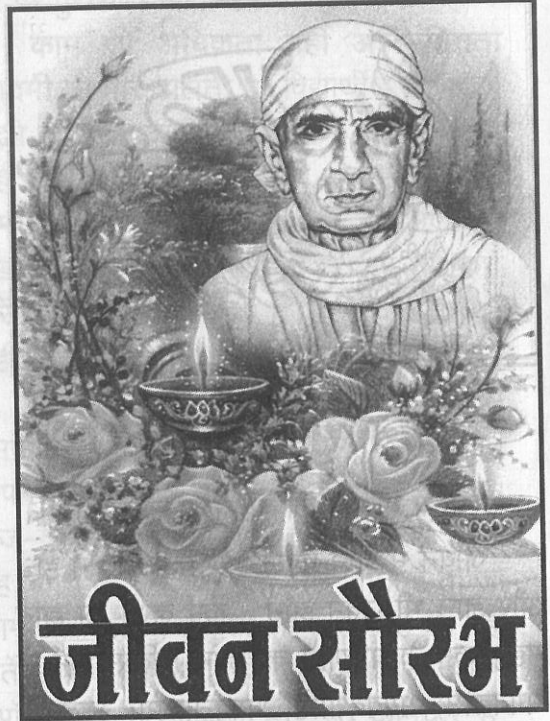
नूरे-इलाही, शाहों के शाह!

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः।
न गुरोरधिकं ज्ञानं तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

'आत्मवेत्ता गुरु से श्रेष्ठ कोई तत्त्व नहीं है, गुरु से अधिक कोई तप नहीं है और गुरु से विशेष कोई ज्ञान नहीं है। ऐसे श्री गुरुदेव को मेरा नमस्कार है।'

गुरुतत्त्व में जगे हुए महापुरुष परमात्मा का प्रकट रूप होते हैं। अंतर्यामी परमात्मा के अंतर्यामित्व का दर्शन करना हो तो ऐसे महापुरुषों के जीवन में ही उसे देख सकते हैं। एक तेजस्वी महापुरुष किसी जंगल में एकांतवास के लिए ठहरे हुए थे। तब एक मुसलमान माली उन्हें रोज देखता था। उनके असाधारण व्यक्तित्व से प्रभावित होकर माली के मन में होता कि 'इन साधु को कुछ खिलाऊँ।' परंतु उसे मन-ही-मन शंका होती कि 'क्या पता, ये हिन्दू साधु मुसलमान के हाथ का कुछ खायेंगे कि नहीं!' इस प्रकार कितने ही दिन बीत गये।

एक दिन वह मूली धो रहा था । इतने में तो वे साधु उसके आगे आकर खड़े हो गये और बोले : ''जो खिलाना हो, खिला । रोज-रोज सोचता रहता है तो आज अपनी इच्छा पूरी कर ।''

वह मुसलमान माली तो आश्चर्यचकित हो उठा कि 'इन साधु को मेरे मन की बात का पता कैसे चला !' वह तो उन महापुरुष के श्रीचरणों में मस्तक नवाकर कहने लगा : ''सचमुच, आप नूरे इलाही हो ! आप शाहों के शाह हो ! मुझे दुआ करो ।'' ऐसा कहकर उसने बड़ी श्रद्धा और भावपूर्ण हृदय से दो मूली साफ करके, धोकर महाराज को दीं । संतश्री ने भी बड़े प्रेम से उन मूलियों को खाया । वह दृश्य देखनेवालों को तो भगवान श्रीरामजी और शबरी भीलन के बेरों की याद आ गयी ।

जानते हैं वे अंतर्यामी, आत्मारामी स्वामी कौन थे ? वे थे भक्तवत्सल योगिराज स्वामी श्री श्री लीलाशाहजी महाराज !

(भगवत्पाद स्वामी श्री श्री लीलाशाहजी महाराज महानिर्वाण-तिथि : १५ नवम्बर) ❑

यदि वह संकल्प चलाये...

संसार-ताप से तप्त जीवों में शांति का संचार करनेवाले, अनादिकाल से अज्ञान के गहन अंधकार में भटकते हुए जीवों को ज्ञान का प्रकाश देकर सही दिशा बतानेवाले, परमात्म-प्राप्तिरूपी मंजिल को तय करने के लिए समय-समय पर योग्य मार्गदर्शन देते हुए परम लक्ष्य तक ले जानेवाले सर्वहितचिंतक ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों की महिमा अवर्णनीय है ।

वे महापुरुष केवल दिशा ही नहीं बताते वरन् चलने के लिए पगडंडी भी बना देते हैं, चलना भी सिखाते हैं, उँगली भी पकड़ाते हैं । जैसे माता-पिता अपने बालक को कंधे पर उठाकर यात्रा पूरी करवाते हैं, वैसे ही वे कृपालु महापुरुष हमारी आध्यात्मिक यात्रा को पूर्ण कर देते हैं । भगवत्पाद स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज के जीवन की एक कृपापूर्ण घटना इस प्रकार है :

स्वामी लीलाशाहजी ने स्वामी राम अवतार शुक्ला के गीता-व्याख्यान की बड़ी प्रशंसा सुनी थी । अतः एक दिन वे उनसे मिलने उनके घर चल दिये । स्वामी राम अवतारजी की आयु ७५ वर्ष के आसपास थी और उस दिन वे इस दुनिया से विदा लेने की तैयारी में थे । कुछ डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था तो कुछ उस समय वहाँ मौजूद थे । स्वामीजी उनके सम्मुख खड़े होकर कहने लगे : ''राम अवतारजी ! मैं इस विचार से आया हूँ कि आपके मुखारविंद से श्रीमद् भगवद्गीता सुनूँ ।''

उनकी नाजुक हालत देखकर स्वामीजी ने उनके परिवारवालों से कहा : ''इन्हें एक गिलास पानी में नींबू का रस व शहद मिलाकर पिलाओ, ठीक हो जायेंगे ।''

वहाँ पर खड़े डॉक्टरों ने कहा : ''इनका अंतिम समय आ चुका है, नींबू-शहद का पानी पीने से तो ये और जल्दी दुनिया से चले जायेंगे ।''

राम अवतारजी ने धीरे से कहा :

''ठीक है, पिलाओ ।''

लीलाशाहजी महाराज ने कमण्डलु से थोड़ा जल हाथ में लिया, उसमें निहारकर संकल्प करके दे दिया । पानी में नींबु-शहद मिलाकर पिलाया गया । स्वामीजी ने चलते-चलते राम अवतारजी से कहा : ''परसों सुबह मेरे पास आना ।'' और आश्चर्य ! वे कुछ ही घंटों में एकदम ठीक हो गये ।

संत जब अपने ब्रह्मस्वभाव में स्थित होकर कुछ कह दें तो वह बाह्यदृष्टि से विपरीत परिणामवाला होने पर भी श्रद्धावान के लिए अनुकूल हो जाता है । आज्ञानुसार राम अवतारजी श्रीचरणों में पहुँचे और स्वामीजी को अष्टांग प्रणाम करके गीता पर व्याख्यान किया । उस दिन से राम अवतारजी प्रतिदिन नियम से पूज्यपाद स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज को श्रीमद् भगवद्गीता सुनाने आते थे । **(शेष पृष्ठ १७ पर)**

मधुर चिंतन

(आत्ममाधुर्य से ओतप्रोत बापूजी की अमृतवाणी)

वशीभूत अंतःकरणवाला पुरुष राग-द्वेष से रहित और अपनी वशीभूत इन्द्रियों के द्वारा विषयों में विचरण करता हुआ भी प्रसन्नता को प्राप्त होता है। वह उनमें लेपायमान नहीं होता, उसका पतन नहीं होता। जिसका चित्त और इन्द्रियाँ वश में नहीं हैं, वह चुप होकर बैठे तो भी संसार का चिंतन करेगा। ज्ञानी संसार में बैठे हुए भी अपने स्वरूप में डटे रहते हैं।

भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. श्री राधाकृष्णन् अच्छे चिंतक माने जाते हैं। उन्होंने एक कहानी लिखी है :

एक भट्ठीवाला था। उसको हररोज स्वप्न आता कि 'मैं चक्रवर्ती सम्राट हूँ।' वह अपना काम निपटाकर जल्दी-जल्दी सो जाता, उस मधुर स्वप्नलोक में जाने के लिए। बाहर के जगत में तो वह भट्ठीवाला था, उसके पास खाने-पीने को भी पर्याप्त नहीं था। गुजारा चलाने के लिए उसे बड़ा परिश्रम करना पड़ता था परंतु धीरे-धीरे वह स्वप्न में सुखी होने लगा तो बाहर के जगत में रुचि कम होने लगी।

प्रतिदिन स्वप्न में देखता कि 'मैं चक्रवर्ती सम्राट बन गया हूँ। छोटे-छोटे राजा लोग मेरी आज्ञा में चलते हैं। छनन-छनन करते हीरे-जवाहरात के गहनों से सजी ललनाएँ चँवर डुला रही हैं।'

एक दिन स्वप्न में वह पेशाब करने के लिए उठा तो पास में जलती हुई भट्ठी में पैर पड़ गया। जलन के मारे वह चिल्ला उठा। सो तो रहा था भट्ठियों के बीच लेकिन स्वप्न देख रहा था कि सम्राट है, इसलिए वह सुखी था।

किसी भी परिस्थिति में आदमी का मन जैसा होता है, सुख-दुःख उसे वैसे ही प्रतीत होते हैं। ज्ञानी का मन परब्रह्म में होता है तो वे संसार में रहते हुए, सब व्यवहार करते हुए भी परम सुखी हैं, ब्रह्मज्ञान में मस्त हैं।

मनुष्य का शरीर कहाँ है, इसका अधिक मूल्य नहीं है। उसका चित्त कहाँ है, इसका अधिक मूल्य है। चित्त परमात्मा में है और आप संसार में रहते हैं तो आप संसार में नहीं हैं, परमात्मा में हैं। प्रभातकाल में जब उठो तब आँख बंद करके ऐसा चिंतन करो कि 'मैं गंगा-किनारे गया। पवित्र गंगा मैया में गोता लगाया। किसी संत के चरणों में सिर झुकाया। उन्होंने मुझे मीठी निगाहों से निहारा।'

पाँच मिनट ऐसा मधुर चिंतन करो। आपका हृदय शुद्ध होने लगेगा, भाव पवित्र होने लगेंगे।

सुबह उठकर देखे हुए सिनेमा के दृश्य याद आयें : 'आहाहा... वह मेरे पास आयी, मुझसे मिली...' आदि-आदि तो देखो, सत्यानाश हो जायेगा। कल्पना तो मन से होगी किंतु तन पर भी प्रभाव पड़ जायेगा। कल्पना में कितनी शक्ति है ! संत-महात्मा-सद्गुरु परमात्मा के साथ विचरते हैं, समाधि लगाते हैं, उनका स्मरण-चिंतन करते हैं तो हृदय आनंदित होता है।

बुल्ला साहब नाम के एक बड़े प्रसिद्ध संत हो गये। जब वे घर में रहते थे तब उनका नाम था बुलाकीराम। गरीब, अनपढ़ बुलाकीराम उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में जमींदार गुलाल साहब के यहाँ हल चलाने का काम करते थे।

बुलाकीराम ने भगवान को पाने का इरादा

बना लिया। जिसे भगवान को पाना हो उसे संतों का दर्शन, सत्संग व उनकी सेवा करनी चाहिए।

बुलाकीराम खेत में हल चलाते-चलाते थोड़ी देर रुकते ताकि बैलों को आराम मिले। एक दिन दोपहर का समय था। वे खेत के किनारे मेंड़ पर बैठे आँखें बंद करके ध्यान कर रहे थे। गुलाल साहब आये तो देखा कि 'बैल तो ऐसे ही खड़े हैं! इन हल में जुते बैलों की छुट्टी करके, उन्हें बाँध के बुलाकीराम कहाँ चला गया?' जैसे नौकर काम के समय काम न करे, और कहीं बैठा हो तो सेठ को गुस्सा आता है, ऐसे ही गुलाल साहब को गुस्सा आया। वे चिल्लाने लगे : ''बुलाकीराम ! बुलाकीराम !! ओ बुलाकीराम !!!...'' अब बुलाकीराम तो ध्यानमग्न थे। इधर-उधर देखते-देखते गुलाल साहब जब निकट पहुँचे तो देखा कि बुलाकीराम मेंड़ पर बैठा है और हाथ में लोटा पकड़े हुए है। जमींदार को आया गुस्सा कि 'मैं इतना चिल्लाता हूँ तो भी जवाब नहीं देता है!' उसने उनकी पीठ पर जोर-से एक लात मारी तो लोटा टेढ़ा हो गया और उसमें से दही ढुल गया। जमींदार चकित हो गया, 'अरे! मैंने लात मारने से पहले देखा था तो लोटे में पानी था। फिर यह अचानक दही कैसे बन गया!'

बुलाकीराम ने आँखें खोलीं और देखा कि मेंड़ पर दही गिरा हुआ है। जमींदार ने पूछा :

''बुलाकीराम ! यह क्या है ?''

बोले : ''मैं ध्यान-ध्यान में संतों को मानसिक भोजन करा रहा था। दाल बनायी, रोटी-सब्जी बनायी फिर सोचा कि गर्मी है तो संतों को दही चाहिए। यह पानी लेकर इस भावना से कि यह दही है, मन-ही-मन मैं संतों के पास दही परोसने जाना चाहता था। दही परोसना ही चाहता था कि इतने में आपकी लात लगी और दही ढुल गया।''

भगवान का चिंतन करनेवाले के मन में यह कैसा सामर्थ्य है कि पानी में से दही बना दे ! लोफर में से भक्त बना दे ! चंचल में से साधक बना दे ! भगवान में मन लगानेवाले के मन में बड़ी अद्भुत कला, लीला, योग्यता होती है।

वह जमींदार गुलाल साहब बुलाकीराम के चरणों पर गिर पड़ा और बुलाकीराम का शिष्य बन गया। नौकर बुलाकीराम फिर नौकर नहीं रहे, भगवान की तरफ ऐसे चले कि संत बुल्ला साहब हो गये। यह घटित घटना है।

कहाँ तो हल चलानेवाला, रूखी रोटी खानेवाला एक गरीब और भक्तिभाव से भगवान को, संतों को भोग लगाता है तो पानी में से दही बन जाता है ! जो भगवान को चाहता है, भगवान उसके अनुकूल हो जाते हैं और उनके पाँच भूत भी उसके अनुकूल हो जाते हैं। हो गये न पाँच भूत अनुकूल ! हुए कि नहीं हुए ? लेकिन हम भगवान से चाहते हैं कि 'फैशन से, आराम से रहें। यह हो जाय, वह हो जाय...' तो वह तो हो जाता है लेकिन फिर वही आदत पड़ जाती है और भगवान छूट जाते हैं। हम भगवान से संसारी चीजें माँगकर संसार के खड्ढे में गिर जाते हैं। आप तो प्रभु में रहो और दूसरों को प्रभु में लगाओ। जब एक गरीब इतना महान संत बन सकता है तो तुम नहीं बन सकते क्या ! अवश्य बन सकते हो ! संकल्प में, शुद्ध चिंतन में अमोघ शक्ति है। □

(पृष्ठ १५ से 'यदि वह संकल्प चलाये...' का शेष)

ब्रह्मनिष्ठा प्राप्त करने के बाद संतों को शास्त्र पढ़ने-सुनने की आवश्यकता ही नहीं होती। वे जो बोलते हैं, वह शास्त्र बन जाता है। फिर भी दूसरों के कल्याण के निमित्त जो घटना घटती है, वह उनकी लीला होती है। फिर चाहे वह लीला सत्संग सुनने की हो या सुनाने की हो, मौज है उनकी ! माता-पिता की तरह कदम-कदम पर हमारी सँभाल रखनेवाले, सर्वहितचिंतक, समता के सिंहासन पर बैठानेवाले ऐसे परम दयालु ब्रह्मनिष्ठ महापुरुषों को कोटि-कोटि वंदन... □

भागवत धर्म का संदेश देता पर्व : दीपावली

✽ दीपावली : ५ नवम्बर ✽

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

अज्ञानरूपी अंधकार पर ज्ञानरूपी प्रकाश की विजय का संदेश देता है जगमगाते दीपों का उत्सव 'दीपावली'। उत्सव, 'उत्' माना उत्कृष्ट 'सव' माना यज्ञ। ऊँचा यज्ञ, उत्कृष्ट यज्ञ इसको उत्सव बोलते हैं। उत्कृष्ट यज्ञ जीवन की माँग है। उत्सव में दुःख को भूलने का मुख्य उद्देश्य होता है। न दुःख दें, न दुःख याद करें और न दुःख बढ़े ऐसा कर्म करें, यह है 'उत्सव'।

जिसके जीवन में उत्सव नहीं है, उसके जीवन में विकास भी नहीं है, नवीनता भी नहीं है, सात्त्विक मधुरता भी नहीं है और वह आत्मा के करीब भी नहीं है।

तो हमारे जीवन में दीपावली आदि के ऐसे शुभ अवसर इसलिए आते हैं कि राग-द्वेष को भूलकर हम फिर से अपना नया जीवन शुरू करें, जिससे जीवात्मा का मंगल हो, कल्याण हो। तो कल्याणकारी वृत्ति है उत्सव। जिसमें शोक नहीं, दुःख नहीं, द्वेष नहीं, राग नहीं, भय नहीं, चिंता नहीं, चित्त शांत और मधुमय भगवान से भरा हो। पुण्य दर्शन से, पुण्य भाव से, पुण्यमय सुख से चित्त भरा हो, यह दीपावली का उत्सव है।

दीपावली के दिनों में घर की साफ-सफाई करना, नयी चीज लाना, दीये जलाना और मिठाई खाना-खिलाना - ये व्यावहारिक दिवालियाँ तो तुमने देखीं, हमने भी देखीं। तुम भी मनाते हो, हम भी मनाते हैं और प्रोत्साहित करते हैं। लेकिन व्यावहारिक दिवालियों के पीछे आश्रम का उद्देश्य रहा है कि पारमार्थिक दिवाली हो जाय। षड्विकारों का दिवाला निकल जाय, षड्ऊर्मियों का दिवाला निकल जाय, षड्ऋतुओं के आकर्षण का दिवाला निकल जाय और सारे आकर्षण जहाँ बौने पड़ते हैं, ऐसे आत्मसुख की जगमगाहट का अनुभव हो, यह परम उद्देश्य रहा है मेरा। और मैंने सत्संग में दीपावली पर्व और वर्ष का प्रथम दिन मनाने पर भी आत्मसुख की ओर, ज्ञान-प्रकाश की ओर समाज को खींचने का प्रयत्न किया है। जितने अंश में जिसकी अच्छी सूझबूझ है, उतने अंश में वह बातें झेल लेता है और फिर प्रकाश में जीता है।

हम दीपावली की अँधेरी रात को जगमगाहट से भर देते हैं, ऐसे ही अविद्या का अंधकार है। इस अंधकार को भी ज्ञान के प्रकाश से भर देना हमारा पुरुषार्थ है, हमारे मनुष्य-जीवन का उद्देश्य है।

वेद भगवान कहते हैं कि 'तू परिस्थितियों से, प्रकृति के प्रभाव से दब मरने के लिए पैदा नहीं हुआ है। तू परिस्थितियों के सिर पर पैर रख के अपने अमरत्व को पाकर मुक्तात्मा होने के लिए पैदा हुआ है, इसलिए तू अपना उद्देश्य ऊँचा रख।'

लक्ष्य न ओझल होने पाये,
कदम मिलाकर (शास्त्र और गुरु के अनुभव से) चल।
सफलता तेरे चरण चूमेगी,
आज नहीं तो कल॥

नूतन वर्ष के दिन आप पक्का इरादा कर लो

कि हमें इसी जन्म में परमात्म-सुख पाना है, परमात्म-ज्ञान पाना है, परमात्म-आनंद पाना है, परमात्म-माधुर्य पाना है। ऐसा अपना साफ हौसला कर दो।

दूसरा आप विकारी सुखों में गिरो नहीं, परमात्मा का आनंद उभारो। फिर दुनिया का कोई भी सुख आपको फँसायेगा नहीं और कोई भी दुःख आपको दबायेगा नहीं।

तीसरी बात है कि आप अपने जीवन में ज्ञान के दीये जलाओ।

'शिवगीता' में प्रार्थना की गयी है :

अज्ञानतिमिरान्धस्य विषयाक्रान्तचेतसः।
ज्ञानप्रभाप्रदानेन प्रसादं कुरु मे प्रभो ॥

'हे प्रभो ! अज्ञानरूपी अंधकार में अंध बने हुए और विषयों से आक्रांत चित्तवाले मुझको ज्ञान का प्रकाश देकर कृपा करो।'

आज के दिन भगवान से विशेषरूप से प्रार्थना करनी चाहिए क्योंकि हम जीवों पर तीन पाश हैं- तामसी पाश, राजसी पाश और सात्त्विक पाश। आलस्य, निद्रा, शराब-कबाब आदि विकारों में तुच्छ होकर पड़े रहना - ये तामस पाश हैं। कई जीव इनमें फँसे हैं। कुछ राजस पाश हैं - सत्ता का, धन का, शत्रु को नीचा दिखाने का, यशस्वी बनने का, मरने के बाद अपना नाम करने का। ये सब वृत्तियाँ, ये पाश जीव को बाँधते हैं। तीसरा पाश है सात्त्विक पाश। 'ऐसी स्थिति बनी रहे, मेरे से बुराई न हो, मेरे लिए ऐसा वातावरण हो, ऐसी स्थिति हो। त्याग होना चाहिए, वैराग्य होना चाहिए, यह होना चाहिए, यह नहीं होना चाहिए, बुरा नहीं होना चाहिए, अच्छा ही होना चाहिए। ऐसा क्यों हुआ ? ऐसा ठीक हुआ, ऐसा बेठीक है।' - इस तरह के सात्त्विक पाश में भी आदमी बँधा रहता है। लेकिन ज्ञानमार्ग इन तीनों से पार पहुँचा देता है। **सदसच्चाहमर्जुन।**

'हे अर्जुन ! सत् भी मैं हूँ और असत् भी मैं ही हूँ।' **(गीता : ९.१९)**

आप ज्ञान का दीया जलाओ। दुःख आये तो दुःख के भोगी मत बनो, सुख आये तो सुख के भोगी मत बनो। सुख और दुःख दोनों को साधन मानकर उनका सदुपयोग करो, उनसे पार ले जानेवाली प्रज्ञा को विकसित करो। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥

'हे अर्जुन ! जो योगी अपनी भाँति सम्पूर्ण भूतों में सम देखता है और सुख अथवा दुःख को भी सबमें सम देखता है, वह योगी परम श्रेष्ठ माना गया है।' **(गीता : ६.३२)**

सुख आ जाय चाहे दुःख आ जाय, योगी परम मतिवाला होता है। सुख-दुःख को देखनेवाली मति के धनी बन जाओ... ज्ञान के प्रकाशक !

चौथी बात आप प्रसन्न रहो, दूसरों की प्रसन्नता में मदद करो। प्रसन्न रहने के लिए सुबह के शुद्ध हवामान में खूब गहरा श्वास लिया, खूब भरा। 'ॐ शांति, ॐ आनंद' का मानसिक जप किया, फिर फूँक मारते हुए चिंता को, हाई बी.पी., लो बी.पी. आदि के रोगों, तनावों को बाहर छोड़ दिया। फिर खूब गहरा श्वास लिया और फिर जोर से फूँक मार दी। ऐसे २५ बार फूँक मार के रोग, भय, चिंता, बीमारियों को भगा दो।

ज्ञान के प्रकाश में जियो। जैसे घर की साफ-सफाई करते हो, ऐसे ही उद्देश्य की साफ-सफाई करना, जैसे घर में नयी चीज लाते हो, ऐसे ही अपने जीवन में नया नजरिया लाना, दिये जलाना तो ज्ञान-प्रकाश में जीना। **यस्य ज्ञानमयं तपः...**

ज्ञानमय तप में जियो। हजारों मंदिरों, मसजिदों, चर्चों में, इधर-उधर जाओ फिर भी

हृदय-मंदिर में ज्ञान के दीये जलाये बिना छुटकारा नहीं है, कल्याण नहीं है।

पर्वों का पुंज है दीपावली का उत्सव। **धनतेरस** के दिन धन्वंतरि महाराज खारे-खारे सागर में से औषधिरूप अमृत लेकर प्रकट हुए थे। आपका जीवन भी औषधियों के द्वारा शारीरिक स्वास्थ्य-सम्पदा से समृद्ध हो।

नरक चतुर्दशी (काली चौदस) और दीपावली की रात जप-तप के लिए बहुत मुक्तिकारक मुहूर्त माना गया है। नरक चतुर्दशी की रात्रि में मंत्रजप करने से मंत्र सिद्ध होता है। यह रात्रि मंत्र-जापकों के लिए वरदानस्वरूप है। इस रात्रि में सरसों के तेल अथवा घी के दीये से काजल बनाना चाहिए। इस काजल को आँखों में आँजने से विशेष लाभ होता है।

लक्ष्मीजी की प्रसन्नता के लिए काली चौदस की रात्रि में **'श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं कमलवासिन्यै स्वाहा।'** मंत्र का जप करने से लाभ होता है।

परमात्मप्राप्ति की इच्छावाले को काली चौदस की रात्रि में श्रद्धा एवं तत्परता से 'ॐ' का, अपने गुरुमंत्र का अर्थसहित जप करना चाहिए।

कुछ नासमझ लोग इन दिनों में पिकनिक मनाने जाते हैं। अरे बुद्धू! दीपावली के दिनों में, नूतन वर्ष के दिनों में अगर लवर-लवरी होकर घूमने जाओगे, रॉक और पॉप में झूमोगे तो जीवनशक्ति का ह्रास ज्यादा होगा। पर्व के दिन विकारी व्यवहार करनेवालों की खैर नहीं! बहुत ज्यादा हानि होती है। बाद में उनको रोना पड़ता है। पर्व के दिनों में तो जप, ध्यान, संयम, साधना करके बुद्धि के प्रकाश को बढ़ाना चाहिए।

दीपावली की रात्रि को कुबेर, लक्ष्मी पूजन के साथ-साथ बुद्धि की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वतीजी का भी पूजन किया जाता है, जिससे लक्ष्मी के साथ-साथ आपको विद्या भी मिले। विद्या भी केवल पेट भरने की विद्या नहीं, वरन् वह विद्या जिससे आपके जीवन में मुक्ति के पुष्प महकें। आज के दिन सप्तधान्य उबटन (गेहूँ, जौ, चावल, चना, मूँग, उड़द और तिल से बना मिश्रण) से स्नान करने पर पुण्य, प्रसन्नता और आरोग्य की प्राप्ति होती है।

पहले के जमाने में गाँवों में दीपावली के दिनों में वर्ष के प्रथम दिन नीम और अशोक वृक्ष के पत्तों के तोरण (बंदनवार) बाँधते थे, जिससे कि वहाँ से लोग गुजरें तो वर्ष भर प्रसन्न रहें, निरोग रहें। **अशोक और नीम के पत्तों में रोगप्रतिकारक शक्ति होती है। उस तोरण के नीचे से गुजरकर जाने से वर्ष भर रोगप्रतिकारक शक्ति बनी रहती है।** वर्ष के प्रथम दिन आप भी अपने घरों में तोरण बाँधो तो अच्छा है।

आप स्वस्थ रहो, सुखी रहो, सम्मानित रहो और जीवन की शाम होने के पहले जीवनदाता के आनंद को प्रकट करो। जीवनदाता के गुण को, स्वभाव को जानकर आप एकदम स्वस्थ हो जाओ, 'स्व' में स्थित हो जाओ।

आदिवासियों में दीपावली के दिन मृतकों को याद करके रोने कि परम्परा न जाने किस बेवकूफ ने शुरू करा दी! वर्ष के प्रथम दिन जो दुःखी रहता है, शोक करता है, वह वर्ष भर दुःखी-ही-दुःखी रहता है। पर्व के दिन रोना, दुःखी होना, शोक करना मानो पूरे वर्ष के लिए दुःख, शोक को बुलाना है। शोक आत्मा का स्वभाव नहीं है। शोक करना हमारा कर्तव्य नहीं है। बीती हुई चीज, बीती हुई घटना को 'ऐसा ठीक नहीं हुआ।' - ऐसा आरोप करके बेवकूफी सिर पर उठाकर आदमी शोक करता है और इस बेवकूफी से आदमी और बोझीला हो जाता है, और कमजोर हो जाता है। बीते हुए का शोक करना मूर्खता है।

दीपावली वर्ष का आखिरी दिन है और अगला

दिन नूतन वर्ष का प्रथम दिन है। वर्ष प्रतिपदा विक्रम सम्वत् (गुजराती) के प्रारम्भ का दिन है। भारतीय संस्कृति को खतरा पहुँचानेवाले लोगों को मार भगानेवाले राजा विक्रमादित्य थे। समाज का शोषण करनेवाले लोगों का दमन करके उन्होंने समाज में सुख-शांति और भारतीय संस्कृति की दिव्यता प्रकटे, ऐसे बहुत-से काम किये।

भारतीय संस्कृति के दिव्य संस्कारों को, संयम-सदाचार को महत्त्व दे के विश्वमानव को उन्नत करने में उनका प्रचार-प्रसार करें। सब स्वस्थ रहें, सबका मंगल हो और स्नेहबल, मनोबल, बुद्धिबल का मूल आत्मबल जगाने के लिए आत्मदेव की उपासना करें।

दीपावली पर समृद्धि-प्रदायक 'गौ-पूजन'

धर्मसिंधु आदि शास्त्रों के अनुसार **गोवर्धन – पूजा** के दिन (दि. ६ नवम्बर को) गायों को सजाकर, उनकी पूजा करके उन्हें भोज्य पदार्थ आदि अर्पित करने का विधान है। गौ-पूजन का मंत्र :

लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता।
घृतं वहति यज्ञार्थे मम पापं व्यपोहतु ॥

धन-धान्य एवं सर्व प्रकार की समृद्धि देनेवाली गौमाता का समाज के द्वारा रक्षण एवं पालन-पोषण हो, इस उद्देश्य से भारत के ऋषि-मुनियों ने यह कितनी दूरदृष्टिपूर्ण व्यवस्था की है!

नारकीय यातनाओं से रक्षा हेतु

यद्यपि कार्तिक मास में तेल नहीं लगाना चाहिए, फिर भी नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पूर्व उठकर तेल-मालिश (तैलाभ्यंग) करके स्नान करने का विधान है। 'सनत्कुमार संहिता' एवं 'धर्मसिंधु' ग्रंथ के अनुसार इससे नारकीय यातनाओं से रक्षा होती है। जो इस दिन सूर्योदय के बाद स्नान करता है उसके शुभकर्मों का नाश हो जाता है। ❑

दीपावली पर लक्ष्मीप्राप्ति की साधना-विधि

दीपावली पर लोग लक्ष्मीप्राप्ति के लिए विभिन्न प्रकार की साधनाएँ करते हैं। हम यहाँ अपने पाठकों को लक्ष्मीप्राप्ति की साधना का एक अत्यंत सरल व मात्र त्रिदिवसीय उपाय बता रहे हैं :

दीपावली के दिन से तीन दिन तक अर्थात् भाईदूज तक एक स्वच्छ कमरे में अगरबत्ती या धूप (केमिकलवाली नहीं, गौ-गोबर से बनी) करके दीपक जलाकर, शरीर पर पीले वस्त्र धारण करके, ललाट पर केसर का तिलक कर, स्फटिक मोतियों से बनी माला द्वारा नित्य प्रातःकाल निम्न मंत्र की दो मालाएँ जपें :

ॐ नमो भाग्यलक्ष्म्यै च विद्महे।
अष्टलक्ष्म्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।

दीपावली लक्ष्मीजी का जन्मदिवस है। समुद्र-मंथन के दौरान इस दिन वे क्षीरसागर से प्रकट हुई थीं। अतः घर में लक्ष्मीजी के वास, दरिद्रता के विनाश और आजीविका के उचित निर्वाह हेतु यह साधना करनेवाले पर लक्ष्मीजी प्रसन्न होती हैं।

पुरुषार्थ और पुण्यों की वृद्धि से लक्ष्मी आती है, दान, पुण्य और कौशल से बढ़ती है, संयम और सदाचार से स्थिर होती है। पाप, ताप और भय से आयी हुई लक्ष्मी कलह और भय पैदा करती है एवं दस वर्ष में नष्ट हो जाती है। जैसे रूई के गोदाम में आग लगने से सारी रूई नष्ट हो जाती है, ऐसे ही गलत साधनों से आये हुए धन के ढेर एकाएक नष्ट हो जाते हैं।

उद्योग, सदाचार, धर्म और संयम से सुख देनेवाला धन मिलता है।

(आश्रम से प्रकाशित 'सदा दिवाली' पुस्तक से)

नूतन वर्ष पर पुण्यमय दर्शन

नूतन वर्ष : ७ नवम्बर

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

दीपावली का दिन वर्ष का आखिरी दिन है और बाद का दिन वर्ष का प्रथम दिन है, विक्रम सम्वत् के आरम्भ का दिन है (गुजराती पंचांग अनुसार)। उस दिन जो प्रसन्न रहता है, वर्ष भर उसका प्रसन्नता से जाता है।

'महाभारत' में भगवान व्यासजी कहते हैं :

यो यादृशेन भावेन तिष्ठत्यस्यां युधिष्ठिर।
हर्षदैन्यादिरूपेण तस्य वर्षं प्रयाति वै॥

'हे युधिष्ठिर ! आज नूतन वर्ष के प्रथम दिन जो मनुष्य हर्ष में रहता है, उसका पूरा वर्ष हर्ष में जाता है और जो शोक में रहता है, उसका पूरा वर्ष शोक में व्यतीत होता है।'

दीपावली के दिन, नूतन वर्ष के दिन मंगलमय चीजों का दर्शन करना भी शुभ माना गया है, पुण्य-प्रदायक माना गया है। जैसे :

उत्तम ब्राह्मण, तीर्थ, वैष्णव, देव-प्रतिमा, सूर्यदेव, सती स्त्री, संन्यासी, यति, ब्रह्मचारी, गौ, अग्नि, गुरु, गजराज, सिंह, श्वेत अश्व, शुक, कोकिल, खंजरीट (खंजन), हंस, मोर, नीलकंठ, शंख पक्षी, बछड़ेसहित गाय, पीपल वृक्ष, पति-पुत्रवाली नारी, तीर्थयात्री, दीपक, सुवर्ण, मणि, मोती, हीरा, माणिक्य, तुलसी, श्वेत पुष्प, फल, श्वेत धान्य, घी, दही, शहद, भरा हुआ घड़ा, लावा, दर्पण, जल, श्वेत पुष्पों की माला, गोरोचन, कपूर, चाँदी, तालाब, फूलों से भरी हुई वाटिका, शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा, चंदन, कस्तूरी, कुंकुम, पताका, अक्षयवट (प्रयाग तथा गया स्थित वटवृक्ष), देववृक्ष (गूगल), देवालय, देवसंबंधी जलाशय, देवता के आश्रित भक्त, देववट, सुगंधित वायु, शंख, दुंदुभि, सीपी, मूँगा, स्फटिक मणि, कुश की जड़, गंगाजी की मिट्टी, कुश, ताँबा, पुराण की पुस्तक, शुद्ध और बीजमंत्रसहित भगवान विष्णु का यंत्र, चिकनी दूब, रत्न, तपस्वी, सिद्ध मंत्र, समुद्र, कृष्णसार (काला) मृग, यज्ञ, महान उत्सव, गोमूत्र, गोबर, गोदुग्ध, गोधूलि, गौशाला, गोखुर, पकी हुई खेती से भरा खेत, सुंदर (सदाचारी) पद्मिनी, सुंदर वेष, वस्त्र एवं दिव्य आभूषणों से विभूषित सौभाग्यवती स्त्री, क्षेमकरी, गंध, दूर्वा, चावल और अक्षत (अखंड चावल), सिद्धान्न (पकाया हुआ अन्न) और उत्तम अन्न- इन सबके दर्शन से पुण्यलाभ होता है।

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, श्रीकृष्णजन्म खंड, अध्याय : ७६ एवं ७८)

लेकिन जिनके हृदय में परमात्मा प्रकट हुए हैं, ऐसे साक्षात् कोई लीलाशाहजी बापू जैसे, नरसिंह मेहता जैसे संत अगर मिल जायें तो समझ लेना चाहिए कि भगवान की हम पर अति-अति विशेष, महाविशेष कृपा है।

कबिरा दर्शन संत के साहिब आवे याद।
लेखे में वो ही घड़ी बाकी के दिन बाद॥

जिनको देखकर परमात्मदेव की याद आ जाय, ऐसे हयात महापुरुष अगर मिल जायें तो वह परम लाभकारी, परम कल्याणकारी माना जाता है। चेतन परमात्मा जिनके हृदय में प्रकट हुआ है, ऐसे संत का, सद्गुरु का दर्शन जिनको मिल जाता है, उनको तो शिवजी के ये वचन याद करने चाहिए :

धन्या माता पिता धन्यो
गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः।
धन्या च वसुधा देवि
यत्र स्याद् गुरुभक्तता॥

हे पार्वती ! उनकी माता धन्य है, उनके पिता धन्य हैं, उनका कुल और गोत्र धन्य है, **कुलोद्भवः** अर्थात् जो उनके कुल में उत्पन्न होंगे वे भी धन्य हैं क्योंकि आत्मसाक्षात्कारी-ब्रह्मवेत्ता संतों का

दर्शन, उनके वचन और भगवन्नाम के उच्चारण का लाभ उन्हें मिलता है, जिससे अंतःकरण की प्रसन्नता स्वाभाविक रूप से प्राप्त होने लगती है।

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा :

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते॥

'अंतःकरण की प्रसन्नता होने पर इसके सम्पूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है और इस प्रसन्न चित्तवाले योगी की बुद्धि शीघ्र ही सब ओर से हटकर एक परमात्मा में ही भलीभाँति स्थिर हो जाती है।' (गीता : २.६५) ❐

संस्मरणीय उद्गार

हम सभीका कर्तव्य होगा कि आपके बताये रास्ते पर चलें

''हम सबका परम सौभाग्य है कि बापूजी के दर्शन हुए। कल आपसे मुलाकात हुई, आशीर्वाद मिला, मार्गदर्शन भी मिला और इशारों-इशारों में आपने वह सब कुछ जो सद्गुरुदेव एक शिष्य को बता सकते हैं, मेरे जैसे एक शिष्य को आशीर्वादरूप में प्रदान किया। आपके आशीर्वाद व कृपादृष्टि से छत्तीसगढ़ में सुख-शांति व समृद्धि रहे। यहाँ के एक-एक व्यक्ति के घर में विकास की किरण आये।

आपने जो ज्ञानोपदेश दिया है, हम सभीका कर्तव्य होगा कि उस रास्ते पर चलें। बापूजी ने खासतौर से पीपल, नीम, आँवला व तुलसी के वृक्ष लगाने के बारे में कहा है। हम इस पर विशेषरूप से ध्यान देंगे।''

- डॉ. रमण सिंह, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़।

(दिनांक : २-२-२००८)

भवनिधि से वही तारणहार

हम राम-नाम निर्मल रंग से,
चित्त चुनरी सदा रँगायेंगे।
प्रभुप्रेम भक्तिरस प्याला पी,
हो अंतर्मुख खो जायेंगे॥

गुरुवर ने बरसाया राम रंग,
हुआ द्रवित हृदय मनवा असंग।
साचा सात्त्विक है साधु संग,
गुरुदर्शन की नित रहती उमंग॥

छलकी गुरु करुणा अपार,
बरसी हरिनाम रसधार।
छाया आत्मरस का खुमार,
ओतप्रोत वही सिरजनहार॥

अद्भुत कवच है सद्गुरु नाम,
गुरुसेवा भक्ति कर्म निष्काम।
जिसका मोल तोल नहीं दाम,
सुखसार सदा सद्गुरु नाम॥

गुरुज्ञान ध्यान सुखदायी,
जन्म कर्म की पीर मिटायी।
जगमग जीवन ज्योति जगायी,
जनहित की है गंगा बहायी॥

निराकार हरि सद्गुरु साकार,
'साक्षी' साहिब है सत्य सार।
व्यापक चैतन्य है सर्व आधार,
हरि सारे जग का पालनहार॥

सद्गुरु महिमा है अपरम्पार,
जोड़े ईश्वर से तन-तार।
खोल दे मन-मंदिर के द्वार,
भवनिधि से वही तारणहार॥

- साक्षी, अहमदाबाद।

वीर्य कैसे बनता है ?

वीर्य शरीर की बहुत मूल्यवान धातु है। भोजन से वीर्य बनने की प्रक्रिया बड़ी लम्बी है। श्री सुश्रुताचार्य ने लिखा है :

रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदः प्रजायते ।
मेदस्यास्थिः ततो मज्जा मज्जायाः शुक्र संभवः ॥

जो भोजन पचता है, उसका पहले रस बनता है । पाँच दिन तक उसका पाचन होकर रक्त बनता है । पाँच दिन बाद रक्त से मांस, उसमें से ५-५ दिन के अंतर से मेद, मेद से हड्डी, हड्डी से मज्जा और मज्जा से अंत में वीर्य बनता है। स्त्री में जो यह धातु बनती है उसे 'रज' कहते हैं। इस प्रकार वीर्य बनने में करीब ३० दिन व ४ घण्टे लग जाते हैं । वैज्ञानिक बताते हैं कि ३२ किलो भोजन से ८०० ग्राम रक्त बनता है और ८०० ग्राम रक्त से लगभग २० ग्राम वीर्य बनता है।

आकर्षक व्यक्तित्व का कारण

वीर्य के संयम से शरीर में अद्भुत आकर्षक शक्ति उत्पन्न होती है, जिसे प्राचीन वैद्य धन्वंतरि ने 'ओज' कहा है। यही ओज मनुष्य को परम लाभ- 'आत्मदर्शन' कराने में सहायक बनता है । आप जहाँ-जहाँ भी किसीके जीवन में कुछ विशेषता, चेहरे पर तेज, वाणी में बल, कार्य में उत्साह पायेंगे, वहाँ समझो वीर्यरक्षण का ही चमत्कार है ।

एक स्वस्थ मनुष्य एक दिन में ८०० ग्राम भोजन के हिसाब से ४० दिन में ३२ किलो भोजन करे तो उसकी कमाई लगभग २० ग्राम वीर्य होगी। महीने की करीब १५ ग्राम हुई और १५ ग्राम या इससे कुछ अधिक वीर्य एक बार के मैथुन में खर्च होता है।

माली की कहानी

एक माली ने अपना तन-मन-धन लगाकर कई दिनों तक परिश्रम करके एक सुंदर बगीचा तैयार किया, जिसमें भाँति-भाँति के मधुर सुगंधयुक्त पुष्प खिले। उन पुष्पों से उसने बढ़िया इत्र तैयार किया। फिर उसने क्या किया, जानते हो ? उस इत्र को एक गंदी नाली (मोरी) में बहा दिया । अरे ! इतने दिनों के परिश्रम से तैयार किये गये इत्र को, जिसकी सुगंध से उसका घर महकनेवाला था, उसने नाली में बहा दिया ! आप कहेंगे कि 'वह माली बड़ा मूर्ख था, पागल था...' मगर अपने-आपमें ही झाँककर देखें, उस माली को कहीं और ढूँढ़ने की जरूरत नहीं है, हममें से कई लोग ऐसे ही माली हैं।

वीर्य बचपन से लेकर आज तक, यानी १५-२० वर्षों में तैयार होकर ओजरूप में शरीर में विद्यमान रहकर तेज, बल और स्फूर्ति देता रहा । अभी भी जो करीब ३० दिन के परिश्रम की कमाई थी, उसे यों ही सामान्य आवेग में आकर अविवेकपूर्वक खर्च कर देना कहाँ की बुद्धिमानी है ! क्या यह उस माली जैसा ही कर्म नहीं है ? वह माली तो दो-चार बार यह भूल करने के बाद किसीके समझाने पर सँभल भी गया होगा, फिर वही-की-वही भूल नहीं दोहरायी होगी परंतु आज तो कई लोग वही भूल दोहराते रहते हैं । अंत में पश्चात्ताप ही हाथ लगता है । क्षणिक सुख के लिए व्यक्ति कामांध होकर बड़े उत्साह से इस मैथुनरूपी कृत्य में पड़ता है परंतु कृत्य पूरा होते ही वह मुर्दे जैसा हो जाता है। होगा ही, उसे पता ही नहीं कि सुख तो नहीं मिला केवल सुखाभास हुआ परंतु उसमें उसने ३०-४० दिन की अपनी कमाई खो दी।

युवावस्था आने तक वीर्यसंचय होता है। वह शरीर में ओज के रूप में स्थित रहता है। वीर्यक्षय से वह तो नष्ट होता ही है, साथ ही अति मैथुन से हड्डियों में से भी कुछ सफेद अंश निकलने लगता है, जिससे युवक अत्यधिक कमजोर होकर नपुंसक भी बन जाते हैं। फिर वे किसीके सम्मुख आँख उठाकर भी नहीं देख पाते। उनका जीवन नारकीय बन जाता है। वीर्यरक्षण का इतना महत्त्व होने के कारण ही कब मैथुन करना, किससे करना, जीवन में कितनी बार करना आदि निर्देश हमारे ऋषि-मुनियों ने शास्त्रों में दे रखे हैं।

सृष्टि-क्रम के लिए मैथुन : एक प्राकृतिक व्यवस्था

शरीर से वीर्य-व्यय यह कोई क्षणिक सुख के लिए प्रकृति की व्यवस्था नहीं है। संतानोत्पत्ति के लिए इसका वास्तविक उपयोग है। यह सृष्टि चलती रहे इसके लिए संतानोत्पत्ति होना जरूरी है। प्रकृति में हर प्रकार की वनस्पति व प्राणिवर्ग में यह काम-प्रवृत्ति स्वभावतः पायी जाती है। इसके वशीभूत होकर हर प्राणी मैथुन करता है व उसका सुख भी उसे मिलता है किंतु इस प्राकृतिक व्यवस्था को ही बार-बार क्षणिक सुख का आधार बना लेना कहाँ की बुद्धिमानी है! पशु भी अपनी ऋतु के अनुसार ही कामवृत्ति में प्रवृत्त होते हैं और स्वस्थ रहते हैं तो क्या मनुष्य पशुवर्ग से भी गया-बीता है? पशुओं में तो बुद्धितत्त्व विकसित नहीं होता पर मनुष्य में तो उसका पूर्ण विकास होता है।

आहारनिद्राभयमैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्।

भोजन करना, भयभीत होना, मैथुन करना और सो जाना - ये तो पशु भी करते हैं। पशु-शरीर में रहकर हम यह सब करते आये हैं। अब मनुष्य-शरीर मिला है; अब भी यदि बुद्धि-विवेकपूर्वक अपने जीवन को नहीं चलाया व क्षणिक सुखों के पीछे ही दौड़ते रहे तो अपने मूल लक्ष्य पर हम कैसे पहुँच पायेंगे? ❑

सिद्धांत-प्रेमी सरदार पटेल

(सरदार पटेल जयंती : ३१ अक्टूबर)

महान आत्माओं की महानता उनके जीवन-सिद्धांतों में होती है। उन्हें अपने सिद्धांत प्राणों से भी अधिक प्रिय होते हैं। सामान्य मानव जिन परिस्थितियों में अपनी निष्ठा से डिग जाता है, महापुरुष ऐसे प्रसंगों में भी अडिग रहते हैं। सत्य ही उनका एकमात्र आश्रय होता है, वे फौलादी संकल्प के धनी होते हैं। उनका अपना पथ होता है, जिससे वे कभी विपथ नहीं होते।

सरदार वल्लभ भाई पटेल जिन्हें देश 'लौह पुरुष' के नाम से भी जानता है, ऐसे ही एक सिद्धांतनिष्ठ नेता थे। उनके जीवन का यह प्रसंग उनके इसी सद्गुण की झाँकी कराता है।

वल्लभ भाई अपने पुत्र-पुत्री को शिक्षा हेतु यूरोप भेजना चाहते थे। इस हेतु रुपये भी कोष में जमा कर दिये गये थे लेकिन ज्यों ही असहयोग आंदोलन की घोषणा की गयी, त्यों ही उन्होंने पूर्वनिर्धारित योजना को ठप कर दिया। उन्होंने दृढ़ निश्चय किया कि 'चाहे जो हो, मैं मन, वचन और कर्म से असहयोग के सिद्धांतों पर दृढ़ रहूँगा। जिस देश के निवासी हमारी बोटी-बोटी के लिए लालायित हैं, जो हमारे रक्त-तर्पण से अपनी प्यास बुझाते हैं, उनकी धरती पर अपनी संतान को ज्ञानप्राप्ति के लिए भेजना अपनी ही आत्मा को कलंकित करना है। भारत माता की आत्मा को दुखाना है।'

उन्होंने सिर्फ सोचा ही नहीं, अपने बच्चों को इंग्लैंड में पढ़ने से साफ मना कर दिया। ऐसी थी उनकी सिद्धांत-प्रियता। तभी तो थे वे 'लौह पुरुष!' ❑

संगीत में स्वर्णपदक

मेरी बेटी स्वल्पा ने पूज्य बापूजी से सन् २००५ में सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा ली थी। वह नियमित रूप से मंत्रजप करती है और **हर वर्ष सारस्वत्य मंत्र का अनुष्ठान भी करती है**। इससे उसकी स्मरणशक्ति, एकाग्रता आदि में ऐसा परिवर्तन हुआ कि उसने जबलपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. (संगीत) में सर्वोच्च अंक अर्जित कर दो स्वर्णपदक प्राप्त किये हैं।

- पुष्पा ज्योतिषी, मंडला (म.प्र.).
मो. : ०७६४२२५१९८६.

राष्ट्रपति द्वारा स्वर्णपदक

पूज्य बापूजी के लखनऊ आगमन पर मैं अपने परिवार के साथ सत्संग सुनने गयी थी। बापूजी की दिव्य अमृतवाणी से प्रभावित होकर मैंने सारस्वत्य मंत्र की दीक्षा ले ली। तब से मैं नियमित जप करती हूँ।

मैं जब भी परीक्षा देने जाती थी तो पहले लखनऊ आश्रम में जाकर पूज्य बापूजी द्वारा शक्तिपात किये गये बड़दादा से आशीर्वाद अवश्य लेती थी, इससे सभी परीक्षाओं में सदैव प्रथम आती थी। बी.ए. के तृतीय वर्ष की परीक्षा में हिन्दी विषय में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने पर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विशेष दीक्षांत समारोह में महामहिम राष्ट्रपतिजी के हाथों मुझे स्वर्णपदक प्राप्त हुआ। मैं अपनी इस सफलता का श्रेय पूज्य बापूजी को एवं उनसे प्राप्त सारस्वत्य मंत्र को देती हूँ। **- अनुराधा अस्थाना**
लखनऊ (उ.प्र.)। मो. : ९३३५९१२८९१.

आया प्रथम, पाया स्वर्णपदक

विश्ववंदनीय, परम पूज्य बापूजी के श्रीचरणों में कोटि-कोटि वंदन !

मैंने सन् १९९७ में पूज्य बापूजी से सारस्वत्य मंत्र एवं गुरुमंत्र की दीक्षा ली थी। दीक्षा के बाद मेरी यादशक्ति में अद्भुत परिवर्तन आया, जिसका परिणाम यह हुआ कि औरंगाबाद (महा.) विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. की परीक्षा में मुझे प्रथम स्थान मिला और स्वर्णपदक से सम्मानित भी किया गया। मुझे 'जलगाँव हेनरी डोनंट मेमोरियल मुट कोर्ट प्रतियोगिता' में सर्वोत्तम विद्यार्थी का पुरस्कार मिला। अभी सिम्बायोसिस इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी पूना से एल.एल.एम. (मास्टर ऑफ लॉ) की परीक्षा मैंने अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की।

यह सब पूज्य बापूजी से प्राप्त मंत्र एवं उनकी कृपा का फल है। मैं और मेरा परिवार इस उपलब्धि के लिए परम पूज्य बापूजी के कृतज्ञ हैं।

- एड. रणजीत अनंतराव शेडगे
मो. : ०९४२२२०३६८६.

सत्संग-सुमन

अपने जीवन को उन्नत करना है और मनुष्य-जीवन का फल पाना है तो आप जितात्मा बनो। जरा-जरा बात में 'मैं दुःखी हूँ, परेशान हूँ।' यह सोचने की गलती न करो। दुःख और परेशानी मन की कल्पना है। परिस्थितियाँ नहीं बदलेंगी तो विकास कैसे होगा ! बच्चा दुःखी होता है... दुःख न माँ बनाती है, न भगवान बनाते हैं, न बच्चा दुःखी होना चाहता है परंतु बेवकूफी से वह दुःखी होता है। **- पूज्य बापूजी**

सर्वाधिक अमृतवर्षा की रात्रि : शरद पूर्णिमा

✻ शरद पूर्णिमा : २२ अक्टूबर ✻

(पूज्य बापूजी के सत्संग-अमृत से)

कामदेव ने भगवान श्रीकृष्ण से कहा कि ''हे वासुदेव ! मैं बड़े-बड़े ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों और ब्रह्मचारियों को हरा चुका हूँ । मैंने ब्रह्माजी को भी आकर्षित कर दिया । शिवजी की भी समाधि विक्षिप्त कर दी । भगवान नारायण ! अब आपकी बारी है। आपके साथ भी मुझे खिलवाड़ करना है। तो हो जाय दो-दो हाथ ?''

भगवान श्रीकृष्ण ने कहा : ''अच्छा बेटे ! मुझ पर तू अपनी शक्ति का जोर देखना चाहता है ! मेरे साथ युद्ध करना चाहता है ! तो बता, मेरे सच, तू एकांत में आयेगा कि मैदान में आयेगा ?''

एकांत में काम की दाल नहीं गली तो भगवान ने कहा : ''कोई बात नहीं । अब बता, तुझे किले में युद्ध करना है कि मैदान में ? अर्थात् मैं अपनी घर-गृहस्थी में रहूँ, तब तुझे युद्ध करना है कि जब मैं मैदान में होऊँ तब युद्ध करना है ?''

बोले : ''महाराज ! जब युद्ध होता है तो मैदान में होता है। किले में क्या करना !''

भगवान बोले : ''ठीक है, मैं तुझे मैदान दूँगा। जब चन्द्रमा पूर्ण कलाओं से विकसित हो, शरद पूनम की रात हो, तब तुझे मौका मिलेगा । मैं ललनाएँ बुला लूँगा ।''

शरद पूनम की रात आयी और श्रीकृष्ण ने बजायी बंसी । बंसी में श्रीकृष्ण ने '**क्लीं**' बीजमंत्र फूँका । क्लीं बीजमंत्र फूँकने की कला तो भगवान श्रीकृष्ण ही जानते हैं। यह बीजमंत्र बड़ा प्रभावशाली होता है ।

श्रीकृष्ण हैं तो सबके सार और अधिष्ठान लेकिन जब कुछ करना होता है न, तो राधाजी का सहारा ढूँढ़ते हैं । राधा भगवान की आह्लादिनी शक्ति माया है ।

भगवान बोले : ''राधे देवी ! तू आगे-आगे चल । कहीं तुझे ऐसा न लगे कि ये गोपिकाओं में उलझ गये, फँस गये। राधे ! तुम भी साथ में रहो। अब युद्ध करना है। काम बेटे को जरा अपनी विजय का अभिमान हो गया है । तो आज उसके साथ दो-दो हाथ होने हैं । चल राधे तू भी ।''

भगवान श्रीकृष्ण ने बंसी बजायी, क्लीं बीजमंत्र फूँका । ३२ राग, ६४ रागिनियाँ... शरद पूनम की रात... मंद-मंद पवन बह रहा है । राधा रानी के साथ हजारों सुंदरियों के बीच भगवान बंसी बजा रहे हैं। कामदेव ने अपने सारे दाँव आजमा लिये। सब विफल हो गया।

भगवान कृष्ण ने कहा :

''काम ! आखिर तो तू मेरा बेटा ही है!''

वही काम भगवान श्रीकृष्ण का बेटा प्रद्युम्न होकर आया ।

कालों के काल, अधिष्ठानों के अधिष्ठान तथा काम-क्रोध, लोभ-मोह सबको सत्ता-स्फूर्ति देनेवाले और सबसे न्यारे रहनेवाले भगवान श्रीकृष्ण को जो अपनी जितनी विशाल समझ और विशाल दृष्टि से देखता है, उतना ही उसके जीवन में रस पैदा होता है।

मनुष्य को चाहिए कि वह अपने जीवन के विध्वंसकारी, विकारी हिस्से को शांति, सर्जन और सत्कर्म में बदल के, सत्यस्वरूप का ध्यान और ज्ञान पाकर परम पद पाने के रास्ते सजग होकर

लग जाय तो उसके जीवन में भी भगवान कृष्ण की नाईं रासलीला होने लगेगी । रासलीला किसको कहते हैं ? नर्तक तो एक हो और नाचनेवाली अनेक हों, उसे रासलीला कहते हैं । नर्तक एक परमात्मा है और नाचनेवाली वृत्तियाँ बहुत हैं । आपके जीवन में भी रासलीला आ जाय लेकिन श्रीकृष्ण की नाईं नर्तक अपने स्वरूप में, अपनी महिमा में रहे और नाचनेवाली नाचते-नाचते नर्तक में खो जायें और नर्तक को खोजने लग जायें और नर्तक उन्हींके बीच में, उन्हींके वेश में छुप जाय - यह बड़ा आध्यात्मिक रहस्य है ।

ऐसा नहीं है कि दो हाथ-पैरवाले किसी बालक का नाम कृष्ण है। यहाँ 'कृष्ण' अर्थात् **कर्षति आकर्षति इति कृष्णः।** जो कर्षित कर दे, आकर्षित कर दे, आह्लादित कर दे, आनंदित कर दे, सर्वांगीण विकास कर दे, उस परमेश्वर ब्रह्म का नाम 'कृष्ण' है । ऐसा नहीं सोचना कि कोई दो हाथ-पैरवाला नंदबाबा का लाला आयेगा और बंसी बजायेगा तब हमारा कल्याण होगा, ऐसा नहीं है। उसकी तो नित्य बंसी बजती रहती है और नित्य गोपिकाएँ विचरण करती रहती हैं । वही कृष्ण आत्मा है, वृत्तियाँ गोपिकाएँ हैं । वही कृष्ण आत्मा है और जो सुरता है वह राधा है । 'राधा'... उलटा दो तो 'धारा' । उसको संवित्, फुरना और चित्तकला भी बोलते हैं ।

काम आता है तो आप काममय हो जाते हो, क्रोध आता है तो क्रोधमय हो जाते हो, चिंता आती है तो चिंतामय हो जाते हो, खिन्नता आती है तो खिन्नतामय हो जाते हो । नहीं-नहीं, आप चित्त को भगवद्मय बनाने में कुशल हो जाइये । जब भी चिंता आये तुरंत भगवद्मय । जब भी काम, क्रोध आये तुरंत भगवद्मय । यही तो पुरुषार्थ है । पानी का रंग कैसा ? जैसा मिलाओ वैसा । चित्त जिसका चिंतन करता है, जैसा चिंतन करता है, चिद्घन चैतन्य की वह लीला वैसा ही प्रतीत कराती है । दुश्मन की दुआ से डर लगता है और सज्जन की गालियाँ भी मीठी लगती हैं । चित्त का ही तो खेल है ! भगवद्भाव से प्रतिकूलताएँ भी दुःख नहीं देतीं और विकारी **दृष्टि से अनुकूलता भी तबाह कर देती है । विकारी दृष्टि विकार और विषाद में गिरा देती है ।**

शरद पूर्णिमा की रात्रि का विशेष महत्त्व है । इस रात को चन्द्रमा की किरणों से अमृत-तत्त्व बरसता है । चन्द्रमा अपनी पूर्ण कलाओं के साथ पृथ्वी पर शीतलता, पोषकशक्ति एवं शांतिरूपी अमृतवर्षा करता है ।

आज की रात्रि चन्द्रमा पृथ्वी के बहुत नजदीक होता है और उसकी उज्ज्वल किरणें पेय एवं खाद्य पदार्थों में पड़ती हैं तो उसे खानेवाला व्यक्ति वर्ष भर निरोग रहता है । उसका शरीर पुष्ट होता है । भगवान ने भी कहा है :

पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः ॥

'रसस्वरूप अर्थात् अमृतमय चन्द्रमा होकर सम्पूर्ण औषधियों को अर्थात् वनस्पतियों को पुष्ट करता हूँ ।' **(गीता : १५.१३)**

आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाय तो चन्द्र का मतलब है शीतलता । बाहर कितने भी परेशान करनेवाले प्रसंग आयें लेकिन आपके दिल में कोई फरियाद न उठे । आप भीतर से ऐसे पुष्ट हों कि बाहर की छोटी-मोटी मुसीबतें आपको परेशान न कर सकें ।

शरद पूर्णिमा की शीतल रात्रि में (९ से १२ बजे के बीच) छत पर चन्द्रमा की किरणों में महीन कपड़े से ढँककर रखी हुई दूध-पोहे अथवा दूध-चावल की खीर अवश्य खानी चाहिए। देर रात होने के कारण कम खायें, भरपेट न खायें, सावधानी बरतें । रात को फ्रिज में रखें या ठंडे पानी में ढँक के रखें । सुबह गर्म करके उपयोग कर सकते हैं । ढाई-तीन घंटे चन्द्रमा की किरणों से पुष्ट यह खीर पित्तशामक, शीतल, सात्त्विक होने के साथ वर्ष भर प्रसन्नता और आरोग्यता में सहायक सिद्ध होती है । इससे चित्त को शांति

मिलती है और साथ ही पित्तजनित समस्त रोगों का प्रकोप भी शांत होता है।

इस रात को हजार काम छोड़कर १५ मिनट चन्द्रमा को एकटक निहारना। एक-आध मिनट आँखें पटपटाना। कम-से-कम १५ मिनट चन्द्रमा की किरणों का फायदा लेना, ज्यादा करो तो हरकत नहीं। इससे ३२ प्रकार की पित्त संबंधी बीमारियों में लाभ होगा, शांति होगी। और फिर ऐसा आसन बिछाना जो विद्युत का कुचालक हो, चाहे छत पर चाहे मैदान में। चन्द्रमा की तरफ देखते-देखते अगर मौज पड़े तो आप लेट भी सकते हैं। श्वासोच्छ्वास के साथ भगवन्नाम और शांति को भरते जायें, निःसंकल्प नारायण में विश्रांति पायें। ऐसा करते-करते आप विश्रांतियोग में चले जाना। विश्रांतियोग... भगवद्योग.... अंतरंग जप करते हुए अपने चित्त को शांत, मधुमय, आनंदमय, सुखमय बनाते जाना। हृदय से जपना प्रीतिपूर्वक। आपको बहुत लाभ होगा। कितना लाभ होगा, यह माप सकें ऐसा कोई तराजू नहीं है। वह तराजू आज तक बना नहीं। ब्रह्माजी भी बनायें तो वह तराजू टूट जायेगा।

जिनको नेत्रज्योति बढ़ानी हो वे शरद पूनम की रात को सूई में धागा पिरोने की कोशिश करें। जिनको दमे की बीमारी हो वे नजदीक के किसी आश्रम या समिति से सम्पर्क साध लेना। दमा मिटानेवाली बूटी निःशुल्क मिलती है, उसे खीर में डाल देना। जिसको दमा है वह बूटीवाली खीर खाये और घूमे, सोये नहीं, इससे दमे में आराम होता है। दूसरा भी दमा मिटाने का प्रयोग है। अंग्रेजी दवाओं से दमा नहीं मिटता लेकिन त्रिफला रसायन १०-१० ग्राम सुबह-शाम खाने से एक महीने में दमे का दम निकल जाता है।

इस रात्रि में ध्यान-भजन, सत्संग, कीर्तन, चन्द्रदर्शन आदि शारीरिक व मानसिक आरोग्यता के लिए अत्यंत लाभदायक हैं। ❒

अमृतफल आँवला

चिरयौवन व दीर्घायुष्य प्रदान करनेवाला, रसायन द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ, आयुर्वेद में 'अमृतफल' नाम से सम्बोधित व औषधियों में श्रेष्ठ फल है - आँवला। आँवला सभी ऋतुओं में, सभी जगह सभीके लिए लाभदायी है।

आँवला विटामिन 'सी' का राजा होने के कारण शरीर को रोगाणुओं के आक्रमण से बचाता है, शारीरिक वृद्धि में आनेवाली रुकावटों को दूर करता है, यकृत के कार्यों को सुचारु रूप से चलने में मदद करता है, जीवनीशक्ति को बढ़ाता है तथा दाँतों व मसूड़ों को मृत्युपर्यंत सुदृढ़ बनाये रखता है।

स्वादिष्ट, पुष्टिप्रद आँवला पाक

गुण और उपयोग : आँवले का यह हलवा अत्यंत स्वादिष्ट, पुष्टिदायक व उत्तम पित्तशामक है। यह सप्तधातुओं की वृद्धि कर शरीर को बलवान व वीर्यवान बनाता है। इसके सेवन से पित्तजनित विकार जैसे - आँखों की जलन, आंतरिक गर्मी, सिरदर्द आदि तथा उच्च रक्तदाब, रक्त व त्वचा के विकार, मूत्र एवं वीर्य संबंधी विकार नष्ट हो जाते हैं। यह एक अत्यंत सुलभ, सस्ता एवं गुणकारी प्रयोग है।

सामग्री : ताजे पके हुए रसदार आँवले १ किलो, मिश्री या चीनी १ किलो, घी १०० ग्राम, चिरौंजी २५ ग्राम, इलायची (छोटी या

बड़ी) १० ग्राम ।

विधि : कुकर में आँवले व आधी कटोरी पानी डालकर आँवलों को उबाल लें । उबले हुए आँवलों में से गुठलियाँ निकालकर गूदा अलग कर लें । गूदे को घी में तब तक भूनें, जब तक पानी का अंश पूर्णतः जल न जाय । पानी जल जाने पर गूदे में से घी अलग होने लगता है । अब इसमें मिश्री या चीनी मिलाकर कलछी से हिलाते रहें । मिश्रण हलवे जैसा गाढ़ा होने पर नीचे उतारकर उसमें इलायची तथा चिरौंजी मिला दें ।

सेवन की मात्रा : दो चम्मच (सुबह) ।

सावधानी : आँवले के सेवन के बाद २ घंटे तक दूध नहीं पीना चाहिए । शुक्रवार, रविवार, षष्ठी तथा सप्तमी के दिन आँवले का सेवन निषिद्ध माना गया है (परंतु बाकी के दिनों में इसका सेवन अवश्य करना चाहिए ।) ।

चटनी, मुरब्बा आदि के रूप में अन्य रीतियों से भी आँवले का सेवन कर लाभ उठा सकते हैं ।

❋ औषधि-प्रयोग ❋

नवशक्ति की प्राप्ति : एक महीने तक आँवले का चूर्ण नियमित रूप से घी, शहद और तिल का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से मनुष्य की बोलने की शक्ति बढ़ती है, शरीर कांतिमान हो उठता है तथा चिरयौवन प्राप्त होता है ।

इन्द्रियों की कार्यक्षमता में वृद्धि : आँवले का चूर्ण पानी, घी या शहद के साथ सेवन करने से जठराग्नि बढ़ती है, सुनने, सूँघने, देखने की क्षमता में बढ़ोतरी होती है तथा दीर्घायुष्य प्राप्त होता है ।

हृदय की मजबूती : सूखा आँवला एवं मिश्री चूर्ण सम मात्रा में एक-एक चम्मच सुबह-शाम सेवन करने से हृदय मजबूत होता है । हृदय के वॉल्व ठीक ढंग से कार्य करते हैं । हृदयरोगियों को यह प्रयोग कम-से-कम एक वर्ष तक नियमित करना चाहिए ।

काले, घने, रेशम जैसे बालों के लिए : २० से ४० ग्राम सूखा आँवला २०० ग्राम पानी में रात को भिगो दें व सुबह उस पानी से बाल धो दें । आँवला-मिश्री का समभाग चूर्ण पानी के साथ सेवन करें । इस प्रयोग से बालों की सभी समस्याएँ खत्म हो जायेंगी व बाल चमचमाते नजर आयेंगे ।

गर्भवती स्त्रियों के लिए : नित्य २ नग मुरब्बा सुबह खाली पेट गर्भवती महिला को खिलाने से प्रसव नैसर्गिक रूप से बिना किसी औषधि और चिकित्सकीय सहयोग के होता है, तथा शिशु में तीव्र रोगप्रतिरोधक क्षमता पायी जाती है, जिसके प्रभाव से शिशु ओजस्वी व सुंदर होता है ।

उच्च रक्तचाप (हाई ब्लडप्रेशर) : आँवले का मुरब्बा छः माह तक नित्य प्रातःकाल खाली पेट खाने से लाभ होता है ।

समस्त यकृत-रोग : ताजे आँवलों का २५ से ३५ ग्राम रस या सूखे आँवलों का ५ ग्राम चूर्ण सेवन करने से यकृत (लीवर) के दोष दूर हो जाते हैं ।

अजीर्ण : आँवला चूर्ण व मिश्री का सम भाग मिश्रण बनाकर भोजन के बाद १ चम्मच सुबह-शाम सेवन करने से अजीर्ण व कब्ज जड़ से समाप्त हो जाते हैं ।

पेट के कीड़े : ताजे आँवले का रस छः चम्मच और शुद्ध शहद १ चम्मच मिलाकर एक सप्ताह तक सुबह-शाम दें । इससे निश्चित रूप से कृमि मल के साथ बाहर आ जाते हैं ।

पेट के समस्त रोग : आँवला चूर्ण का गोमूत्र के साथ सेवन करने से पेट के लगभग सभी रोगों में लाभ होता है ।

तेज व मेधा की वृद्धि : आँवला चूर्ण घी के साथ रोज सेवन करने से शरीर में तेज व मेधाशक्ति की वृद्धि होती है ।

दीर्घायु-प्राप्ति हेतु : 'गरुड़ पुराण' के अनुसार सौ वर्ष तक जीने के इच्छुक व्यक्ति को नित्य आँवला मिले जल से स्नान करना चाहिए । ❑

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

१ व २ सितम्बर को जन्माष्टमी-महोत्सव सूरत (गुज.) में मनाया गया ।

३ व ४ सितम्बर को गोधरा (गुज.) की जनता को लम्बे समय के अंतराल के बाद बापूजी के सत्संग का योग प्राप्त हुआ । इसके चलते गोधरावासियों ने उत्स्फूर्त उपस्थिति दर्शायी । पूज्यश्री ने अंतर्यामी प्रभु की पुकार को जगाकर उसके ज्ञान, कृपावर्षा के लिए स्वयं को पात्र बनाने के बेजोड़ उपाय प्रार्थना पर जोर दिया । प्रार्थना की गहराइयों में साधकों को ले जाते हुए बापूजी बोले : ''हे प्रभु ! जब राग और द्वेष से बुद्धि विनिर्मुक्त होती है तो आप अंतर्यामी रूप में हमको प्रेरित करते हो और जब हम आपका ध्यान धरते हैं तब आप मन में इष्टरूप में प्रकट होते हो और तत्त्वरूप से आप सर्वत्र समान रूप से सभीमें विराजमान हो । हे परमेश्वर ! आप महान योगी हो । आपका ज्ञान पानेवाला और चिंतन करनेवाला भी योगी हो जाता है ।''

५ सितम्बर को **लुणावाड़ा (गुज.)** में सत्संग व भंडारे का लाभ यहाँ की जनता व दरिद्रनारायणों को मिला । जीवनोपयोगी चीज-वस्तुओं के वितरण के साथ ही जीवन को सुखी, सम्पन्न बनाने के उपाय भी पूज्य बापूजी ने बताये ''हल्दी और चावल पीसकर उसके घोल से घर के प्रवेशद्वार के बगल में दीवाल पर 'ॐ' अथवा स्वस्तिक बना दें। यह घर को बाधाओं से सुरक्षित रखने में मदद करता है। केवल हल्दी के घोल से भी 'ॐ' लिखें तो यही फल प्राप्त होगा।''

५ सितम्बर (दोपहर) को **मोडासा (गुज.)** में भी सत्संग और भंडारे का आयोजन हुआ । जीवन में पराभक्ति का प्रकाश, समता की सुवास लानेवाला पावन सत्संग मोडासा की जनता को प्राप्त हुआ । बापूजी बोले : ''तुम्हारे जीवन में सुखद परिस्थिति आये, दुःखद परिस्थिति आये तो ये आ नहीं रहीं, जा रही हैं, ऐसा समझकर उनका सदुपयोग करो ।

जो दुःख-सुख का भोगी नहीं होता उसके हृदय में भगवद्भक्ति प्रकट होती है । **मद्भक्तिं लभते पराम् ।** उसे पराभक्ति प्राप्त होती है । फिर तो उसकी दृष्टि जहाँ तक जाती है, वहाँ तक के लोगों को पुण्यलाभ होता है ।''

कुछ समय तक एकांत-सेवन करके पुनः बापूजी निकल पड़े जनकल्याण के महायज्ञ को सम्पन्न करने । **१० सितम्बर** को **कन्दरोड़ी (हि.प्र.) व पठानकोट (पंजाब)** के लोग बिना किसी पूर्व आयोजन के ही बापूजी का दर्शन-सत्संग पा के निहाल हो गये । **११ सितम्बर** को **जुगिआल (पंजाब)** के भक्तों ने भी बापूजी का दर्शन-सत्संग पाया । **१२ सितम्बर** को **चम्बा (हि.प्र.)** की धर्मप्रेमी जनता को ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु पूज्य बापूजी के सत्संग का लाभ मिला । भगवद्रस से विकारी रसों पर विजय पाने की कुंजी बताते हुए बापूजी बोले :

''भगवान का ज्ञान होगा तो भगवान के स्वभाव का ज्ञान भी हो जायेगा और भगवान के स्वभाव का एक बार ज्ञान हो जाय तो आप नहीं चाहेंगे तो भी आपका मन भगवद्रस में, भगवद्-आनंद में, भगवन्माधुर्य में आ जायेगा । जब भगवद्रस का माधुर्य आया तो विकारों का आकर्षण अथवा निंदा-स्तुति का प्रभाव आप पर नहीं पड़ेगा । आप मुक्तात्मा हो जायेंगे, जितात्मा हो जायेंगे ।''

१४ सितम्बर को **पठानकोट (पंजाब)** में सत्संग हुआ । बापूजी ने कहा :

''पति दुःख नहीं मिटा सकता, पत्नी दुःख नहीं मिटा सकती, पैसा दुःख नहीं मिटा सकता,

सत्ता दुःख नहीं मिटा सकती, हरि के ज्ञान से, हरि के सुमिरन से ही दुःख का अंत होता है।''

१४ सितम्बर को ही पठानकोट के साथ-साथ **दीनानगर व मुकेरियाँ (पंजाब)** वासियों को भी भगवदीय मस्ती बाँटते हुए, भक्तिरस छलकाते हुए बापूजी जालंधर पहुँचे।

१५ सितम्बर को सुबह **जालंधर (पंजाब)** में व दोपहर को **लुधियाना** में अपने प्यारे सद्गुरु की एक झलक पाने के लिए उमड़ पड़ी जनमेदिनी ने सत्संग-पंडाल को छोटा कर दिया था।

भगवान के निर्दोष स्वभाव, निर्दोष प्रेम का वर्णन करते हुए हमारा निर्दोष स्वभाव, निर्दोष प्रेम जगाने की गुरुकुंजी तो बापूजी जैसे ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु ही जानते हैं। यहाँ बापूजी के सत्संग में आया :

''बड़े-में-बड़ा सहायक, बड़े-में-बड़ा रक्षक और बलवान अगर कोई है तो सर्वेश्वर, परमेश्वर है। दूसरा कोई बलवान दिखता हो तो वह सहाय के बदले में कुछ चाहेगा। आप उसके अधीन बनो अथवा वह आपका कभी उपयोग करे। भगवान आपको अधीन भी नहीं बनाना चाहते। आपका फायदा ले के भगवान को कौन-सी मंजिलें बनानी हैं ! भगवान का बड़ा निर्दोष प्रेम है, निर्दोष स्वभाव है।''

१६ सितम्बर को **अम्बाला (हरियाणा)** में सत्संग हुआ। सुखी जीवन जीने के मौलिक सूत्र बताते हुए बापूजी ने कहा :

''आप अपने चित्त में किसी वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति के प्रति द्वेष की गाँठ मत बाँधो। द्वेष जलन पैदा करता है। किसीके प्रति द्वेष न रखो।

जो बीत गयी सो बीत गयी,
तकदीर का शिकवा कौन करे।

जब झगड़ा हुआ, उस समय सामनेवाला जितना बदमाश-लुच्चा था, दस मिनट के बाद वैसा नहीं होता।

सास ने, बहू ने, देवरानी, जेठानी ने कुछ कह दिया तो गाँठ मत बाँधो। गाँठ बाँधनी है तो कपड़े में तीन गाँठें बाँधो। 'हे विश्वात्मा प्रभु ! हमारा मन-बुद्धि सत्य में लगे। हमारा प्रेम सत्यस्वरूप तुझमें हो, हमारी रक्षा करना।' - ऐसी प्रार्थना करके तीन गाँठें बाँधो। सुबह बाँधो और रात को खोलते समय बोलो : 'हे भगवान ! तुम मेरे हो, मैं तुम्हारा हूँ। तुम ज्ञानस्वरूप हो, साक्षीस्वरूप हो, चैतन्य हो, आनंदस्वरूप हो, नित्य हो और मेरे आत्मा हो। ॐ आनंद... ॐ आनंद...''

१७ सितम्बर को **कैथल (हरि.)** की जनता को सम्बोधित करते हुए बापूजी ने ये मार्मिक वचन कहे : ''जो हर पल हमारे साथ रहते हैं, हर परिस्थिति के साक्षी हैं, हर अवस्था के अधिष्ठान हैं और हर प्राणी के परम सुहृद, जिगरी-जान हैं, वे परमात्मा 'हरि' हैं। **हरि सम जग कछु वस्तु नहीं...** उस हरि की सत्ता, कृपा, सामर्थ्य के आगे जगत कोई मायने नहीं रखता। यह जगत प्रभावशाली, महत्त्वपूर्ण तब तक लगता है जब तक भगवान का महत्त्व समझ में नहीं आया।''

१८ व १९ सितम्बर को **करनाल (हरि.)** में बड़ी संख्या में साधक-भक्तों ने बापूजी की सर्वत्र सुख व सद्भाव फैलानेवाली सद्भाव-सम्पन्न अमृतवाणी का रसास्वादन किया। बापूजी बोले : ''आप दूसरों के सुख को देखकर सुखी हो जाइये। दूसरे को तो अपने सुख को पाने के लिए मेहनत करनी पड़ेगी लेकिन आपको सुखी होने के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ेगी और दूसरों के दुःख में आप दुःखी हो जाओ तो आपमें परदुःखकातरता का सद्गुण आ जायेगा। सद्गुण से आपको संतोष होगा।

दूसरे के दुःख में दुःखी होने से आपका अपना दुःख आपको सतायेगा नहीं। दूसरे का दुःख मिटाने के लिए आप लग जायेंगे तो आपको अंतरात्मा का संतोष मिलेगा। भगवान का सिद्धांत है कि जो दूसरों के दुःख हरता है, उसके दुःख भगवान हर लेते हैं।''

१९ सितम्बर को एक ही दिन **करनाल** के साथ ही **सोनीपत (हरि.)** में तथा १९ व २०

सितम्बर **(सुबह)** को **बड़ौत (उ.प्र.)** में सत्संग-प्रसाद बँटा।

२१ (शाम) से २३ सितम्बर (दोपहर) तक **रोहिणी, दिल्ली** में पूर्णिमा-दर्शन व सत्संग-महोत्सव के लिए भारी बारिश व बाढ़ के हालातों के बीच भी विशाल जनसमुदाय उमड़ा। इन भक्तों की तितिक्षा-तपस्या देख यही लगता था कि बापूजी के प्यारे शिष्यों ने मात्र सत्संग सुना ही नहीं है, अपितु उसे अपने जीवन में धारण कर हर परिस्थिति में आनंद में, समता में रहते हुए अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ने की अपने गुरुदेव की सीख जीवन में उतारी भी है। बापूजी ने भी कहा : ''बुद्धि के पीछे जो देव है, उसीको अंतरात्मा बोलते हैं। बुद्धि के पीछे भगवान तो है लेकिन उसको बुद्धि के आगे भी रखो, दायें भी रखो, बायें भी रखो तो जीने का भी मजा आयेगा, हँसने का भी मजा आयेगा, रोने का भी मजा आयेगा, नाचने का भी मजा आयेगा, मौन-समाधि का भी मजा आयेगा और मरने का भी मजा आयेगा, वह यार ऐसा सच्चिदानंद है !''

२३ (शाम) से २५ सितम्बर (सुबह) तक **अहमदाबाद (गुज.)** में पूनम दर्शनार्थियों को दर्शन-सत्संग का अवसर प्राप्त हुआ। साधकों के उद्देश्य को दृढ़ीभूत करनेवाले ये वचन पूज्यश्री ने कहे : ''जैसे बिना स्टेयरिंग की गाड़ी, ऐसे ही बिना उद्देश्य का जीवन। उद्देश्य बनाना नहीं है, उद्देश्य जानना है। उद्देश्य मानकर नहीं, उद्देश्य जानकर उसके अनुरूप चलें। उद्देश्य रखें कि 'मैं जो वास्तविक चैतन्य आत्मा हूँ, परमात्मा का अमृत-पुत्र हूँ, अमृतस्वरूप हूँ, अपने शाश्वत ज्ञान को और शाश्वत सुख को और शाश्वत जो मेरा 'मैं' है, उसको पाऊँगा।''

इसके उपरांत शुरू हुआ बापूजी की कर्नाटक-यात्रा का लोकमंगलकारी दौर।

कर्नाटक की भूमि पूज्यश्री की उपस्थिति से गौरवान्वित हुई। इसी कड़ी में कर्नाटक सरकार ने भी ऐसे लोकहितकारी, जनमानस के हृदय-पटल पर छाये हुए संतश्री को अपना विशेष अतिथि घोषित करके विशेष सम्मान प्रदान कर धन्यता का अनुभव किया।

कर्नाटक की राजधानी बेंगलोर से इस यात्रा की शुरुआत हुई। **२५ (शाम) से २६ सितम्बर** तक **बेंगलोर** में उपस्थित जनमेदिनी को सम्बोधित करते हुए बापूजी बोले : ''भूलकर भी अपने को सदा के लिए कामी, क्रोधी, लोभी, मोही मत मानो, दुःखी, चिंतित मत मानो। बुराई से जुड़ो नहीं, अच्छाई का अहं मत करो। इन दोनों को जो देखता है, वह आत्मा है। उसको 'मैं' मानकर, परमात्मा को 'मेरा' मानकर गुरु से दीक्षा-शिक्षा लेकर **क्षिप्रं भवति धर्मात्मा।** तुम जल्दी धर्मात्मा हो जाओ। तुम्हें धर्ममेघा समाधि की प्राप्ति कराने के लिए भगवान ने भेजा है और वह भगवान तुम्हारा कितना हितैषी है, तुमको पता नहीं है।''

२७ (शाम) से २८ सितम्बर (सुबह) तक **बीदर (कर्नाटक)** में सत्संग हुआ। यहाँ के सत्संग में उमड़ी जनमेदिनी ने आयोजकों को भी आश्चर्यचकित कर दिया। इस जनसमुदाय को बापूजी ने भगवान से अपनत्व का रास्ता अपनाकर भगवन्मय होने की कला सिखायी। बापूजी ने कहा : ''प्रभु तो मेरे हैं, आत्मा अमर है, परमात्मा अमर है। भगवान अंशी हैं और जीव अंश है। अंश अंशी से अलग नहीं होता। पानी की तरंग पानी से अलग नहीं, ऐसे ही जीवात्मा-परमात्मा से अलग नहीं।

कलजुग केवल हरि गुन गाहा।
गावत नर पावहिं भव थाहा ॥

कलियुग में हरि-गुण, हरि-ज्ञान, हरि-प्रीति कलियुग के दोषों को हरती है और हृदय में भगवद्‌रस भरती है।''

२८ सितम्बर के एक ही दिन **बीदर, गुलबर्गा, बीजापुर, बागलकोट (कर्नाटक)** इन जगहों पर पहुँचकर बापूजी ने सत्संगियों को सत्संग-प्रसाद से तृप्त किया।

२९ सितम्बर को **बेल्लारी तथा हुबली**

(कर्नाटक) में सत्संग-आयोजन हुआ । बापूजी बोले : ''जो संसार से मजा लेने की कोशिश करते हैं, समझ लो उनको मंकी ब्रांड अथवा पतंगा ब्रांड बुद्धि मिली है । मजा लेने की बात से, इच्छा से आप गुमराह हो जाते हो । संसार से सुख लेने की इच्छा छोड़ दो ।''

३० सितम्बर को रामजन्मभूमि के फैसले के कारण देश भर में १४४ की धारा लगी थी । देश के कई नेताओं एवं अग्रणियों ने दिन भर भाषण देकर शांति व भाईचारा बनाये रखने की अपील की थी । सब अपना-अपना राग आलाप रहे थे परंतु पूज्य बापूजी ने देशवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा था कि 'कुछ नहीं होगा । कोई दंगा-वंगा होनेवाला नहीं है । चिंता छोड़ दो ।' और बापूजी की वाणी ही सत्य हुई । इन संतपुरुष के सत्संग में शांति व अमन-चैन के सिवाय कुछ नहीं होता, यह समझकर बुद्धिमान कर्नाटक व गोवा सरकार एवं प्रशासन ने भी बापूजी का सम्मान किया और सत्संगियों की सेवा कर सत्संग-आयोजन में सहयोग दिया । धारा १४४ अशांति फैलानेवालों के लिए होती है, शांति का प्रसाद बाँटनेवालों के लिए नहीं । इसीसे धारा १४४ यहाँ सत्संग व सेवा की धारा में परिणत होती दिखाई दी ।

३० सितम्बर (शाम) को **बेलगाम (कर्नाटक) व गोवा** में सत्संगियों ने पूज्य बापूजी का पावन सान्निध्य पाया । यहाँ के सत्संगियों को सम्बोधित करते हुए पूज्यश्री ने कहा :

''धन मिलने से दुःख मिटता तो धनी लोग निर्दुःख होते, सत्ता मिलने से दुःख मिटता तो सत्तावाले निर्दुःख होते, सौंदर्य से दुःख मिटता तो ललनाएँ निर्दुःख होतीं, बल से दुःख मिटता तो पहलवान और ताकतवर लोग निर्दुःख होते । निर्दुःख होने का एक ही उपाय है कि भगवान की बात जैसे अर्जुन ने मानी, वैसे आप भी गीता की बात मान लो । गीता कहती है : **ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः** । आप भगवान के सनातन सपूत हैं । शरीर मरने के बाद भी जो नहीं मरता वह आप हो ।

ईस्वर अंस जीव अबिनासी,
चेतन अमल सहज सुख रासी ॥

(श्री रामचरित. उ.कां. : ११६.१)

आप विमल हो, मैल आपमें नहीं है, पाप आपमें नहीं है, दुःख आपमें नहीं है, मृत्यु आपके आगे आ नहीं सकती । मृत्यु आयेगी तो शरीर के सामने आयेगी । आप जो हो उसको मृत्यु नहीं घेर सकती है, जो आप नहीं हो उसको मृत्यु घेरेगी । आप अज हैं, शाश्वत हैं, विभु हैं, यह गीता का ज्ञान आप मान लो । इस अनुभव को हृदयपूर्वक मान लो और फिर संतों के सत्संग से जान लो । इसके अनुभव का रास्ता कबीरजी बता रहे हैं...

कबीर सोई दिन भला जा दिन साधु मिलाय ।
अंक भरै भरि भेटिये पाप शरीरां जाय ॥१॥
कबीर दरशन साधु के बड़े भाग दरशाय ।
जो होवै सूली सजा काटै ई टरी जाय ॥२॥
दरशन कीजे साधु का दिन में कई कई बार ।
आसोजा का मेह ज्यों बहुत करै उपकार ॥३॥
कई बार नहीं करि सकै दोय बखत करि लेय ।
कबीर साधू दरस ते काल दगा नहीं देय ॥४॥
दोय बखत नहीं करि सकै दिन में करु इक बार ।
कबीर साधु दरस ते उतरे भौ जल पार ॥५॥
दूजै दिन नहीं करि सकै तीजै दिन करु जाय ।
कबीर साधू दरस ते मोक्ष मुक्ति फल पाय ॥६॥
तीजे चौथै नहीं करै सातैं दिन करु जाय ।
या में विलंब न कीजिये कहै कबीर समुझाय ॥७॥
सातैं दिन नहीं करि सकै पाख पाख करि लेय ।
कहे कबीर सो भक्तजन जनम सुफल करि लेय ॥८॥
पाख पाख नहीं करि सकै मास मास करु जाय ।
ता में देर न लाइये कहै कबीर समुझाय ॥९॥
मात पिता सुत इस्तरी आलस बन्धु कानि ।
साधु दरस को जब चलै ये अटकावै खानि ॥१०॥
इन अटकाया ना रहै साधू दरस को जाय ।
कबीर सोई संत जन मोक्ष मुक्ति फल पाय ॥११॥''

कर्नाटक में छलका जोगी का आत्मानंद सिंधु

पूज्य बापूजी की सत्संग-गंगा में डुबकी लगाकर आत्मचैतन्य का माधुर्य जगाया हुबली व गुलबर्गा वासियों ने ।

RNP. No. GAMC 1132/2009-11
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2011)
WPP LIC No. CPMG/GJ/41/09-11
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 31-12-2011)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2009-11
WPP LIC No. U (C)-232/2009-11
MH/MR-NW-57/2009-11
MR/TECH/WPP-21/NW/2010
'D' No. MR/TECH/47.4/2010

Posting at PSO Ahmedabad between 1st to 17th of every month. * Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.